कोई महाशय इसे न छापे

ओ३म्

श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चैव धार्य्यताम् ।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषाम् समाचरेत ।
धर्म के उपदेश को सुनकर वैसा ही धारण करो और आत्मा
के विरुद्ध चाहे कुछ क्यों न हो कभी न करो ।

मांस भक्ष्याभक्ष्य विचार

इस पुस्तक में मांस खाने के सम्बन्ध में अति सभ्यता से मधुर और प्यारे शब्दों में वादाविवाद सहित ३३ आक्षेपों का उत्तर देते हुये बहुत से विद्वानों की सम्मति और पवित्र पुस्तकों के प्रमाणों से सिद्ध करके दिखाया गया है कि मनुष्य वास्तविक शाकाहारी है। मांस मनुष्य का स्वाभाविक भोज्य पदार्थ नहीं है [illegible] एकबार अवश्य इसका अवलोकन कीजिये

जिसको

मु० इन्द्रजीत पेशकार संसफी [illegible]जहांपुर

रचयिता नारीधर्म विचार ने रचकर

पं० काशीनाथ वाजपेयी के प्रबन्ध से ओंकार प्रेस प्रयाग में प्रकाशित किया

प्रथमबार २२०० जिल्द]   [मूल्य प्रति पुस्तक ।)

६ S. D.　　　॥ ओ३म् ॥

मांस भक्ष्याभक्ष्य विचार।

दृते दृंह मा मित्रस्यमा चक्षुषा

सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि

समीक्षे मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

यजु० अ० ३६ मं १८

हे परमात्मन्! आप दयानिधि, कृपासिन्धु, दया सागर, दुष्ट स्वभाव नाशक, शुभगुण वर्धक हैं आप ऐसी कृपा कीजिये कि हम शुभ गुणों से युक्त होकर प्राणी मात्र को दया दृष्टि से देखें, सब से मित्र भाव से वर्तें और सब प्राणी मुझे भी मित्रदृष्टि से देखें। हे प्राण-भू परमात्मन्! मैं प्राणीमात्र को मित्र दृष्टि से अपने प्राणवत् प्रिय जानूं और पक्षपात छोड़कर परम प्रेम से वर्ताव करूं, अन्याय से युक्त कभी न हूं और इस मनुष्य रूपी पेड़ के जो चार फल धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष हैं उनके प्राप्त करने के लिये तन मन धन से सदा यत्न करता रहूं।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

प्रिय पाठक वृन्दो ! मेरे निवेदन को सूक्ष्म विचार से पक्षपात छोड़कर बुद्धि पूर्वक विचारिये परमात्मा ने अपने दानों में से सर्वोत्तम दान बुद्धि दी आप को दी है जो सम्पूर्ण बलों से बड़ा बल है पूर्व ऋषियों, देवताओं ने इसी की प्राप्ति को परमात्मा से याचना की है "यां मेधां देवगणः" "मेधां मे वरुणो ददात" "सप्त ऋषि वा परहता शरीरे" "गायत्री" आदि अनेकान मंत्रों में इसी को मांगा है इसी को ऋषी बतलाया है सच है जिसकी बुद्धि ठीक है वही बलवान वही धनवान वही अधिष्ठाता वही ज्ञाता है वही लोक परलोक के कार्य्यों को उचित रीति से उद्देश्यकर आदर्श तक पहुंच सकता है वरन् सम्पूर्ण जीवों को वश में कर सकता है सच है:—

"बुद्धिर्यस्य बलं तस्य निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम्" एक पुरुष पांचसौ पशुओं गाय भैंसों को चरा लाता है परन्तु दो बुद्धिमान पुरुषों को नहीं पकड़ सकता एक उनमें पूर्व को भागे दूसरा पश्चिम को वह दोनों की ओर नहीं जा सकता परन्तु कितने शोक की बात है कि हम सांसारिक कार्यों में तो इससे काम लेते हैं, धेले के

शाक मोल लेने में सड़ी गली पत्तियों को देख भाल लेते हैं गज़ भर भूमि के अर्थ हाईकोर्ट तक अभियोग ले जाते हैं बाल की खाल निकालते हैं बड़े बड़े वकील बैरिष्टरों से सम्मति लेते हैं वे भी भी बहुमूल्य के चश्मे लगाकर बुद्धिपूर्वक मिसल देखकर सम्मति देते हैं, परन्तु हम धर्म सम्बन्धी कार्यों में उससे किञ्चित काम लेना उचित नहीं समझते परमात्मा ने सत असत के विचारने को यह दान दिया था इसलिये आवश्यक है कि इससे काम लें। आओ मित्रो हम आप मिलकर उभी निस्पक्ष बुद्धि से मांसभक्षण विषय पर विचार करें और देखें कि यह मांस खाना धर्म और परमात्मा की आज्ञा के अनुकूल है वा प्रतिकूल यह कर्म स्वर्ग का कारण है अथवा नर्क का। जिसकी भूल हो वह मान लेवे सत्य ज्ञात होजाने पर तदनुकूल आचरण करे यदि यह कार्य अनुचित है तो हम और आप इस घोर पाप से बचें शाकाहारी बनें जो पाप कर चुके वह कर चुके आगे तो बचें। किया हुआ अपराध भरनाही पड़ेगा चाहे जानकर किया हो चाहे न जानकर भूले से किया हो, वर्तमान काल में जब किसी पापी को इस

बहाने से कि मैं कानून नहीं जानता था अब जान गया भविष्य में ऐसा पाप फिर नहीं करूंगा छोड़ नहीं देता वरन् उत्तर देता है कि जब फिर पाप नहीं करेगा दण्ड भी नहीं पावेगा इस बार जो पाप किया है उसका दण्ड तो भुगतनाही पड़ेगा। जब सांसारिक न्यायाधीशों का यह उत्तर है तो परमात्मा जो नियन्ता और न्यायस्वरूप है जिसकी सारी प्रजा पर एकसी दृष्टि है वह बिना दण्ड दिये कैसे छोड़ देगा मनुष्य बोते समय तो स्वतंत्र है चाहे जौ बोवे चाहे गेहूं जब बो चुका तो फल उसके अधिकार से बाहर होजाता है कि जौ के स्थान पर गेहूं वा गेहूं के स्थान पर जौ काटसके इसी प्रकार कर्म करने से प्रथम तो उसे अधिकार है कि शुभकर्म करे वा अशुभ करने के पश्चात् उसका फल सुख अथवा दुःख उसकी शक्ति से बाहर होजाता जो कर चुका वह भुगतना पड़ेगा। जब फिर नहीं करेगा फल भी नहीं पावेगा अर्थात् जब पाप नहीं करेगा दण्ड भी नहीं पावेगा यह सब सीधी २ बातें हैं परन्तु विचार और विवेक का चक्षु उस समय अंधा हो जाता है जब उसपर

पक्षपात का मांड़ा छा जाता है आपको यह लेख पक्ष-पात छोड़कर विचारना और पश्चात् निवेदन पर ध्यान देना होगा इस बात का भी ध्यान रखिये कि सच्ची बातें सदैव एकही होती हैं दो नहीं होतीं जैसे दो और दो का जोड़ चार होता है आप अमेरका यूरुप एशिया सारे संसार का पर्य्यटन कर आइये सृष्टि के आदि से अन्त तक जाइये ठीक और सच्चा उत्तर चारही होगा शेष तीन पांच झूठे होंगे जब से सृष्टि कर्ता ने सृष्टि रची है आज पर्यन्त सारे काम नियम पूर्वक होरहे हैं और आगे को भी होते रहेंगे सूर्य्य वही, अग्नि वही, जल वही है कोटानि वर्ष पश्चात् भी द्वितीय सूर्य नहीं बन जाता जैसे आदि सृष्टि में मनुष्यों के नाक, कान सारे अंगोपाङ्ग थे वैसेही और उन्हीं स्थानों पर आज तक विद्यमान हैं और आगे को भी रहेंगे। इसी प्रकार जब आदि सृष्टि में किसी मतमतान्तर की मुख्यता नहीं थी तो पश्चात् को भी नहीं हो सकती सब को एक से उन्नति के साधन मिले हैं कोई उनसे कार्य्य ले कोई न ले यह उसका दोष है चाहे अदूरदर्शिता और पक्षपात के कारण कोई किसी

को मित्र समझो, किसी को शत्रु । यह उसका दोष है नहीं तो न्यायाधीश परमात्मा के निकट से तो पक्षपात कोसों दूर है । परमेश्वर ने मनुष्य को सर्वोपरि बना शुभकर्मों के करने और एक दूसरे के दुःख दर्द में सम्मिलित होने की आज्ञा दी है किताब की आदि में जो मंत्र है उसी में सारे जीवों के साथ मित्रता रखनें का उपदेश है बस हमारा और आपका यह कर्तव्य कर्म है कि उसी के अनकूल आचरण कर मनुष्य बनें सच कहा है कि अन्यों के दुख से दुखित नहीं है तो तेरा मनुष्य नाम रखनाही व्यर्थ है किसी के मन को दुखाना अच्छा मत नहीं समझ देख, कितना अच्छा सर्वोत्तम प्रमाण दिया है ।

हुमाय वर हमा मुर्गां अज़ान शरफ़ दारद ।
कि उस्तुख्वां खुर्दो ताइरे नियाज़ारद ॥

हुमा सब चिड़ियों पर इस हेतु से बड़प्पन रखती है कि हड्डियां खाती है पर किसी चिड़िया को नहीं सताती, इस लिये यदि अपनी भलाई का ध्यान है तो आवश्यकता है कि मन में अच्छे भाव दूसरों के उपकार के भरो, नहीं तो अन्त को पछताने के सिवा

और कुछ हाथ नहीं आवेगा सोचो कि एक आदमी बिना किसी मज़हबी विचार के हिंसा अर्थात् किसी पशु पक्षी का वध नहीं करता और दूसरा मजहबी विचार से सैकड़ों वधकर चुका है बहु काल पश्चात् पता लगा कि हिंसा महापाप है तब दोनों की दशा में कितना अन्तर होगा पहिला कितना निडर और सुखी प्रसन्न चित्त होगा दूसरा कितना दुखी भयभीत होगा—इस कारण आवश्यकता है कि मनुष्य प्रथम से ही अपना पल्लू पापों से पाक रक्खें यदि ईश्वर से भलाई की आशा रखते हैं तो उसकी प्रजाके साथ भलाई करें नहीं तो एक बेचारे निरबल पशु को जिसको जिह्वा नहीं अर्थात् जो अपनी विपत्ति को जिह्वा द्वारा प्रकट नहीं कर सकता जितना जी चाहे सतालो परन्तु स्मरण रहे कि उस पर तो वह समय बीत जावेगा परन्तु आपको छींट का बदला ईंट अवश्य मिलेगा—मैंने जहां तक बन सका किसी जाति विशेष अथवा मत विशेष को लक्षित नहीं किया उसका कारण यह है कि मेरे विचार में लगभग प्रत्येक मतमतान्तर के पुरुष यदि कुछ न कुछ अधिक न्यून संख्या में उसके

स्वाद में फंसे हुये हैं तो इसी मतवाले उसको छोड़े हुये भी पाये जाते हैं तथापि यदि कहीं२ नाम आवश्यकतानुसार प्रमाण देने के स्थान पर यदि आगये हों तो पाठकगण क्षमा करें मैंने जहां तक विचारा है उससे यह फल निकला है कि मनुष्य मांसाहारी नहीं है इस के सिद्ध करने के लिये जो कुछ मैं युक्ति और प्रमाण उपस्थित कर सकूंगा उसीके सम्बन्ध से प्रतिफल निकालिये जहां तक सम्भव होगा विरोधियों के आक्षेपों के उत्तर देने का भी साहस करूंगा परन्तु निर्णय आप के हाथ होगा एक बात और बतलाये देता हूं कि आज संसार में मुझे कोई ऐसा पाप दिखाई नहीं देता जिसकी बाबत लेख बद्ध अथवा मुखाग्र कुछ न कुछ अच्छाई न दिखलाई जा रही हो वरन् प्रत्येक पाप धर्म और पुण्य बतलाया और समझाया गया है उदाहरण अति घृणित हैं परन्तु आवश्यकता जान कुछ दिखलाता हूं। हा! कोई पाप ऐसा नहीं है जिसके गुण न गाये गये हों विचार कर देखिये स्नान करना आरोग्यता के अर्थ कितना आवश्यक है और व्यभिचार कितना महापाप है परन्तु हा! एक श्लोक से नहाना

दूषित और व्यभिचार पुणीत बताया गया है जैसा कि :—

प्रातःस्नायी नर्कंयाति माघस्नायी विशेषतः।
परस्त्री कंठलग्नोही सः पुरुषः परमां गतिम् ॥

इस श्लोक के बनाने वाले ने लोक लज्ज़ा का भी भय न किया। सच है "कामातुराणाम भयं न लज्जा" कहां तो पूर्वजों का यह उपदेश—

परदारन्नगन्तव्या सर्व वर्णेषु कर्हिंचित् ।
नहीदृश मनायुष्यं त्रिषुलोकेषु विद्यते ॥

सम्पूर्ण वर्णों में कभी भी पर स्त्री से संयोग न करे क्योंकि आयु को क्षीण करने वाला ऐसा कर्म तीन लोकों में भी विद्यमान नहीं है। क्या अच्छा कहा है—

प्राणाति पातःस्तैन्यंच पर दाराभि मर्शनम्।
त्रीणि पापानि कायेन नित्यशः परिवर्जयेत् ॥

अर्थ–प्राणात्पात अर्थात् प्राण हरण स्तैन्य अर्थात चोरी और पर स्त्री से समागम इन तीन पापों को प्रतिदिन शरीर से त्यागता रहे जबतक मूढ़वृत्ति रहती है तब तक पापकर्म पाप नहीं जान पड़ते ध्यान देकर कार्य्य करना चाहिये–

कर्त्तव्यमेव कर्त्तव्यं प्राणै कण्ठ गतैरपि ।
अकर्त्तव्यं न कर्त्तव्यं प्राणै कण्ठ गतैरपि ॥

अर्थ–मनुष्य को चाहिये कि प्राणों के कंठगत होने पर भी जो कुछ कर्त्तव्य है वही करे और अकर्त्तव्य कभी न करे चाहे प्राण कंठगत क्यों न हों ।

द्यूत अर्थात् जुआ कितना दुष्ट कर्म है जिसकी हार और जीत दोनों निषिद्ध हैं जिसने महाभारत रचाया और पांडवों को वर्षों मारा २ फिराया उनकी बाबत निर्णयसिंधु द्वितीय प्रच्छेद कार्तिकी शुक्ल प्रतिपदा निर्णय में लिखा है–

तस्मिन द्यूतं प्रकर्त्तव्यं प्रभाते तत्र मानवैः ।
तस्मिन्द्यूतं जयोयस्य तस्यसम्वत्सरं जयः ॥

अर्थ—प्रतिपदा को इसलिये जुआ खेलना चाहिये कि जिसकी उस दिन प्रातः को जीत होगी वह साल भर जीतेगा ।

विलायत में तम्बाकू सिगरेट कोई सोलह वर्ष से न्यून आयुवाला विद्यार्थी नहीं पी सकता । वहां कानून है यहां भी मदरसों में पढ़ाया जाता है कि साधारण पुरुष ताम्बाकू पीना लाभकारी समझते हैं पर मदिरा और अफ़यून को बुरा बताते हैं पर वास्तविक में यह ही बड़ी पलीद वस्तु है इसमें नैकोशिया और हेडरोस्यानक एसड़ जो विषैली हवा में मिली रहती हैं इसलिये ऐसी वस्तु यदि विषवत समझी जावे तो अनुचित नहीं पर सब पुरुष कह उठेंगे कि वह सब पीते हैं पर कोई मर नहीं जाता तो सोचने की बात है कि जो अफीम खाते हैं वे दो तोले तक खा जाते हैं पर नहीं मरते और जो नहीं खाते वे छः माशे में मर जाते हैं तम्बाकू खाने से मतली

पैदा होती है तबियत निरबल रंग, सुस्त हो जाता है इसलिये तम्बाकू से परहेज बेहतर है एक कवि ने बताया है।

(कवित्त) जुर की भास दुष्ट दुलही है हलाहल की,
बीछिन की बहिन परपञ्च रूप सारी है।
नानी करयारे की धतूरे की ममानी
पितयानी बच्छनाग की जहान में विराजी है॥
ठाकुर कहत जो बचावे धन्य प्राणी वे,
माहिर की मौसी विष शिख्यान की आजी है।
कहत हैं पुकार कर बड़े २ पण्डित जन,
तमाकू दे मारी कहो किसे उपराजी है॥

तम्बाकू के सेवन से आवाज़ बिगड़ जाती है आंखों का प्रकाश न्यून हो जाता है दांत भ्रष्ट दिखाई पड़ते हैं मुह से दुर्गन्ध आने लगती है पांच वर्ष आयु कम हो जाती है पर आज यह कितनी प्रचि-लित हो रही है बच्चे से बूढ़े तक सबही सेवन कर रहे हैं पर इसका सेवन धर्म युक्त नहीं कहा जाकसता है बादशाह अकबर के समय में पुर्तगेजों की कृपा से अमेरिका से इस

देश में तमाकू का आगमन हुआ था परन्तु इसकी उपस्थिति कृष्ण के समय तक बताई जा रही है शोक महाशोक कहते हैं :–

कृष्ण चले वैकुंठ को राधा पकड़ी बांह।
यहां तमाकू खाय लो वहां तमाकू नाहिं ॥

तमाकू भरी और लगे बकने—लेना तिक्को भक्को गुलबीन शिकारी गुली चचोड़ धुआं लपाक लेना नक्कारे शाह फ़ाके शाह चिंगारा शाह भिंगारा शाह बदनाम शाहताना शाह इत्यादि—भंग छानी और चर्स भरा और लगे गप्पें उड़ाने—बम शंकर कांटा लगे न कंकर, मूज़ी को तंगकर खाने पीने का ढंग कर। लै लेना और भेज देना। जो करे यारों की बदगोई, उसके वंश में रहे न कोई। शराब के तारीफ़ में तो कलम ही तोड़ दिये हैं किताबें रंग दी हैं कहते हैं :–

आबे हयात इसको कहूँ तो बजा कहूँ,
हो ख़ाक उनके मुंह में जो इसको बुरा कहें।
साक़िया मैं अगर दुआ मांगू,
तो बजुज़ मै के और क्या माँगू।
मली अय शेख़ मुझ को मैं कदः,
की तुझ को कौसर की।

तेरा हम ज़ुल्फ़ हूं विन्ते इनब भी तेरी साली है।
ज़ाहिद शराब पीने दे मसजिद में बैठ कर ॥
या वह जगह बता कि जहाँ पर खुदा नहीं।
मैरा राम कर दी तु अय शैख़ दीन पनाह।
प अ मैकदः व क़ौल तो वैतुल हराम शुद ॥

वामियों की दशा तो आप से गुप्त ही नहीं है वह इसे गुप्त घराने की भी बताते हैं इसी प्रकार मछली और मांस की झूठी बड़ाई में कोई कसर नहीं छोड़ी जैसा कवित :—

रोहू के खाये से रोग घटे लछिया पुछिया दुःख दारिद्र टारे, सौर के कारज कौन करे मारो मथुरा घर बैठे निहारे, केवल के गुन कौन सुने जब जंग चढ़े तब दुष्ट को मारे, मीन हुनी तै दोप धरे ताको नारायण नर्क में डारे। अथवा—लुच्या सह मेवा चन्द बिजुभा जैसी चिरौंजी नुक्ती से झींगा जब हलदी लगाई है। खुदहा जैसे खुर्मा लपकी जैसे लुचई गरई दरविशट पेड़ा पुरी खाई है।

केचिद्वदन्त्यमृतमस्ति पुरे सुराणां,
केचिद्वदन्ति वनिताधरपल्लवेषु।

भूमेवयं शास्त्रविचार दक्षा,
जम्भीर नीर परिपूरितमत्सखण्डे ॥

अर्थ—कोई अमृत स्वरपुर में बलाता है कोई प्यारी स्त्री के हूंठों में परन्तु मैंने जो विचार कर देखा तो ज्ञात हुआ कि अमृत यदि कहीं है तो मछली के उस टुकड़े में है जो जम्भीरी के पानी में भिगोया गया हो।

मत्समांसस्य भोक्तारं येनिन्दन्तिऽधमानराः।
षष्ठि वर्ष सहस्त्राणि विष्ठायां जायतेक्रमि ॥

अर्थ-जो मांस मछली के खाने का निषेध करते हैं वे साठ हजार वर्ष तक नर्क के कीड़े होते हैं

मत्स्यका सिक्कादोषं पक्षिदोषं चपक्षणा।
अजापुत्रं खुरादोषं सत्यंसत्य न संशयः ॥

अर्थ—मछली में सिक्कों का पखेरुओं में पंखों का बकरियों में खुरों का दोष है उन्हें अलग करदें शेष में कोई दोष नहीं—इस प्रकार के बहुत से हुए लेख मिलते हैं उन को छोड़ता हूं इस कारण कि इन्हें उपरोक्त दो चार वचनों के लिखने से ही पुस्तकाउच्य दृष्टि

से नहीं देखी जावेगी। इसी तरह जिसको जिस प्रकार का व्यसन होजाता है वह उसका-अन्यों को भी कहीं मिथ्या गुण जतलाकर कहीं डरा और धमकाकर कहीं स्वाद का चसका दिलाकर अभ्यासी बनादेता है आप को अपने पूर्व ऋषियों और प्रसिद्ध पुरुषों के लेखों और उनके पवित्र और निर्दोष जीवन पर ध्यान देना चाहिये कि वे इन स्वादों से स्वयं किस प्रकार बचे और आनेवाली सन्तानों के अर्थ एक आदर्श छोड़ गये उन्होंने इन्द्रियों को भृत्य गुलाम बनाया और रईस कहलाये आज उनहीं की सन्तानों में से इन्द्रियों के स्वादों में फंसे हुये रईसों की सन्तान से सईस बन गये जिन्होंने केवल शरीररूपी गाड़ी को धोना और इन्द्रियरूपी घोड़ों को मलना आदि ही अपना कर्तव्य समझ लिया यह ख्याल ही भुला दिया कि शरीर की गाड़ी हमारे लिये थी न कि हम गाड़ी के लिये। इस-लिये जहां इस गाड़ी के पुष्ट करने के अर्थ अपने उलटे विचार से मांसादि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन करने खाने-वालोंसे यह कहते हुये पाये जाते हैं कि बिना मांसके घास खाते हैं उनके वचनोंको "वावावाक्य प्रमाणं न" जान

आपको सत्य का खोज करना चाहिये मैं सत्य को यहां तक मानता हूं कि जहां आज बहुधा पुरुषों को यह निश्चय है कि इसका प्रचार भारतवर्ष में यवन ईसाइयों के द्वारा हुआ है इस हेतु से कि वे अधिक संख्या में आज मांसाहारी पाये जाते हैं परन्तु मेरा अपना ख्याल है कि इसका प्रचार हज़रत मुहम्मद साहिब और मसीह साहिब के जन्मसे बहुत प्रथम संसार में, कहीं २ भारतवर्ष में भी बहुतायत से वामियों के समय में हो चुका था जिसके दूर करने के लिये महात्मा गौतम (बुद्ध) ने जान तोड़ यत्न किया था उस महात्मा ने विद्या की खान काशी में जाकर पुजारियों और पण्डितों से प्रार्थना की थी कि यदि मनुष्य में कुछ भी मनुष्यपन है तो उसका मन हरे भरे फूल को तोड़ने से दुःख जाता है ।

पत्ती पे फूल की लगा धक्का बाद का ।
आंसू के बूंद आंखो से उसकी टपक पड़े ॥

तुमने क्यों इतनी निर्दयता स्वीकार की है कि सहस्रों निरपराधी पशुओं का नित्यप्रति अपनी जीभ के स्वादार्थ बलिदान करते हो जब वहां उसका यह निवे-

दन अस्वीकार हो गया और गृह क्रिया वेदोक्त और धर्मानुकूल बताई गई तब निराश होकर महात्मा ने राज छोड़ लंगोटी लगा प्रचार करना प्रारंभ किया और प्रचार करते हुये एक बार एक ऐसे स्थान में पहुंचे जहां कई सहस्र दुंब्बे नित्यप्रति बलिदान होकर कुछ प्राप्त होते थे उन्होंने उन भेंट चढ़ाने वालों से निवेदन किया कि आप मुझे दो बातें राजा से कह लेने दीजिये फिर आप इनका बलिदान कीजिये जब राजा को ख़बर होकर आज्ञा प्राप्त होगई तब उनसे निवेदन किया कि आप इतनों का बध तो करा सकते हैं। परन्तु क्या एक को भी बना व जिला भी सकते हैं? कहा नहीं, तब कहा जब टूटा शीशा जोड़ नहीं सकते तो मारने से प्रथम जब तक मेरी दूसरी बात समाप्त न हो जावे आप इन्हें रोके रखिये बध न होने दीजिये जब स्वीकृत हुई तब महात्मा ने पूछा कि ऐसे कितने पशुओं की जान एक मनुष्य की जान के बराबर है कहा गया लाखों की, तब महात्मा ने कहा कि आप इनसे सैकड़ों गुनी अधिक मेरी जान को इनके बदले मार दो और इन्हें छोड़ दो। झट कहते ही राजा के

सम्मुख अपनी गरदन झुका दी। इसकी सच्ची और नम्र वार्ता ने राजा पर इतना प्रभाव डाला कि राजा एक भौंचक और आश्चर्य समुद्र में डूब गया और अपने कर कमलों से उसकी ग्रीवा को उठाया और उस दिन से अपने राज्य में ही बलिदान की प्रथा को बन्द नहीं कराया वरन् उसके प्रचार में पूरा सहायक हो गया। इस से सिद्ध है कि ईसाई मुसलमानों के समय से प्रथम इस का प्रचार हो चुका था।

प्रथम इसके कि कोई प्रमाण दिये जावें यह जानना आवश्यक है कि भक्ष्याभक्ष्यका मसला (विषय) तीन प्रकार से है—

एक—धर्मशास्त्र का बताया हुआ—जिस पदार्थ के सेवन से मन दोषयुक्त बनता है उसको अभक्ष्य और जिससे मन पवित्र बनता है उसको भक्ष्य अर्थात् भोजन करने युक्त बताता है।

दूसरा, वैदिकशास्त्र के अनकूल-जिस पदार्थ के सेवन से शरीर इन्द्रिय को लाभ पहुंचे उसको वैदिक मत भक्ष्य खाने योग्य बताता है-जिस से हानि पहुंचे उसे अभक्ष्य।

तीसरे-कुसाइटी समाज के नियम के अनुकूल प्रतिकूल विचार है जिसको कुसाइटी अभक्ष्य बत-लाये वह खाने के अयोग्य जिसको भक्ष्य बताये वह खाने के योग्य है।

अब इनमें कुसाइटी की हस्ती व्यक्तियों की हस्ती पर निर-भर है इस कारण शरीर को कुसाइटी की अपेक्षा अधिकांश पद प्राप्त है क्योंकि यदि शरीर रोग ग्रस्त हैं तो कुसाइटी भी रोग ग्रस्त होगी। इसलिये कुसाइटी को निरोग्य रखने के कारण शरीर का आरोग्य होना परमावश्यक है और शरीर को ठीक तौर पर चलाने और काम में लगाने के लिये शुद्ध मनकी आवश्यकता है यदि मन अशुद्ध हो तो शरीर ठीक काम नहीं कर सकता इस कारण मन को शरीर पर अधिकता प्राप्त है और मन भोजनों से बनता है जैसा कि—

अन्नमशितं त्रिधाविधीयते तस्यास्थि विष्ठो धातुस्तत्पुरीषं भवति। योमध्यमः तन्मांसं स योऽणिष्ठातन्मनः॥

भोजन का सब से स्थूल भाग पुरीष विष्टा बनता

है और उससे सूक्ष्म भाग मांस बनता है और सब से सूक्ष्म भाग मन बनता है तो अहार को मन से अलग रखना ठीक नहीं हो सकता। यही कारण है कि सम्पूर्ण मतवादियों ने हराम हलाल का मसला मज़हब में सम्मिलित किया है ऐसी दशा में जब कि शारीरिक मानसिक सामाजिक उन्नति के साथ अहार का सम्बन्ध है और पवित्र नियमों में इन्हीं तीन उन्नतियों को मुख्य उद्देश्य रक्खा है तो भक्ष्याभक्ष्यका विषय अलग क्योंकर धर्म वा मज़हब से रह सकता है कई भोले भाले लीडरों का यह विचार है कि खाने से धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं है बड़ा भयानक परिणाम उत्पन्न करने वाला है इस कारण अब कई प्रमाण आप पाठकों की भेंट हैं उससे नतीजा निकालिये। योग सूत्र पातञ्जल में जहां योग श्चित्तवृत्ति निरोध को बतलाया है और "ध्यानं निरविषयं मनः,, अर्थात् जहां मन निर्विषयी हो जावे उसे ध्यान बताया है वहां पर योग की सिद्धि और ध्यानावस्थित होने के लिये जो आठ बड़े बड़े नद पार करना बताये हैं उनमें से पहिले नद तक पहुंचने के लिये जो प्रथम में छोटे २ पांच अन्य सोते हैं उन में

सब से पहिला गीता अहिंसा है जो कितना कठिन है जिसमें बताया है कि यदि योग के अन्दर पैर रखना और मन को निर्विषयी बनाने का विचार है तो प्रथम मनवच कर्म से प्राणी मात्र से, वैर त्याग दो तब इस के अन्दर पैर उठाने का नाम लो जैसा कि:—

तत्राहिंसा सत्यास्तेय ब्रह्मचर्य्य प्रग्रह। यमा:।

श्रीकृष्ण ने गीता में "अहिंसा परमोधर्म:" "अहिंसा परमोयज्ञः" बताया है मनु बताते हैं कि मांसाहारी को दया नहीं रहती।

गृहबन्धो कुतोविद्या भार्यालुब्धे कुतो शुचि।
लोभलुब्धे कुतोलाभो मांसाहारी कुतो दया॥

आगे बताया है कि दया से बढ़कर कोई धर्म नहीं है।

शान्तितुल्यं तपेनास्ति संतोषान्त परमं सुखम्।
नातृष्णायां परोव्याधि नच: धर्मोंदयापर:॥

यह बात प्रसिद्ध ही है कि बिना दया के सन्त कसाई, यदि सन्त हो और दया न हो तो वह कसाई

तुल्य है सांख्य दर्शन में बताया है कि मनुष्य का भोग वह है जो चैतन्यता से रहित हो (चिदवसानो भोगः) मनुस्मृति में बताया है कि जो अन्य के मांस से अपने मांस को बढ़ाने की इच्छा करता है उससे अधिक और कोई पापी नहीं है।

स्वमांसं परमांसेन योवर्द्धयितुमिच्छति।
अनभ्यच्यं पितृन्देवास ततोविर्तान्त पुण्यकृत

मनुभगवान् ने इस बात का भी उत्तर दे दिया है जो पुरुष कहते हैं कि हम मारने नहीं जाते कसाई मारता है, हम मोल लेकर खाते हैं पाप यदि हो भी तो मारनेवाले के गरदन पर हो सकता है उन्होंने इस सारे झगड़े को एकही श्लोक में निपटा दिया है कि आठ पुरुष मारनेवाले ही कहाते हैं।

(१) सम्मति देनेवाला (२) शरीर से अंगों को अलग करानेवाला (३) मारनेवाला (४) मोल लेनेवाला (५) बेचनेवाला (६) पकानेवाला (७) परोसनेवाला (८) खानेवाला जैसा कि:—

अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी ।
संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातकः ॥

ब्रह्मचारियों को जहां वेदारंभ में उपदेश है उसमें तीन प्रकार की जगह निषेध है "वर्जयेन्मधुमांसं च" "प्राणीनाम चैवहिंसनं" "उपघातं परस्वम्" अर्थात न मांस खाना, न प्राणीमात्र को सताना, न अन्यों को कष्ट पहुंचाना । शाकाहार—

कर्मणा मनसा वाचा सर्वभूतेषु सर्वदा ।
अक्लेश जननं प्रोक्ता त्वहिंसा परमर्षिभिः ॥

अर्थात् कायिक, मानसिक, वाचक जो तीन प्रकार से हिंसा होना सम्भव है उसे सब प्राणियों से छोड़ दे ऐसी अहिंसा ऋषियों ने बतलाई है अर्थात् हिंसा का मन में विचार भी न करे मन में पाप का विचार करने से भी मन में दाग़ पड़ जाता है । अथर्ववेद कांड ८ अंक १ सूक्त ७ मंत्र २१ में कच्चा मांस व पक्का मांस खाने वालों को पाप बताया है और उसी वेद के कां० ६ अ० ७ ७१ मं० ७० में मांस खाने और मदिरा पीने का निषेध है । इस प्रकार के सैकड़ों प्रमाण हैं जो पुस्तक बढ़

जाने के कारण लिखे नहीं जा सकते बुद्धिमान थोड़े से ही जान लेते हैं आगे चलकर भली भांति ज्ञात हो जावेगा कि मनुष्य शाकाहारी है किसी प्रकार मांसाहारी नहीं है यह भी ज्ञात होजावेगा कि केवल भारतवर्षीय विद्वानों की ही ऐसी सम्मति नहीं है वरन् जैसा मैं निवेदन कर चुका हूं कि सचाई एकही होती है वह किसी मत का अनुगामी होने पर भी जब उसे विदित होजाती है तब उसके शुद्ध अन्तःकरण से लेख व मुखाग्र द्वारा निकले बिना नहीं रहती धर्मात्मा तत्वदर्शी पुरुष बातचीत सुनकर ही उसके भावों का पता लगा लेते हैं कि जो कुछ इसके अन्तःकरण में है वह ही निकल रहा है चाहे वह किसी न किसी ढंग से उसके छिपाने का यत्न करता रहा हो बस, जब किसी शुद्धात्मा को पता लगा कि हिंसा तो एक ओर रही मन का दुखाना तक पाप है तो अपनी सम्मति प्रकट करने से नहीं रुके आज जो उनके लेख मिलते हैं वह सोने के पानी से लिखने के योग्य हैं परन्तु, पक्षपात ! तेरा सत्यानाश हो वैसे तो किसी अहिल इसलाम के सामने हज़रत शादी वा निज़ामी वा मौलाना रूम का नाम ले दिया

जावे तो तुर्त उसकी बड़ाई के पुल बांध देते हैं कि सुब्हानअल्ला आपका कलाम फ़क़ीराना प्रत्येक मतमतान्तर वाले के मानने योग्य है कैसी २ उत्तम शिक्षायें कूट कूट कर भरी हैं वह साहिबान अपने कलाम की बदौलतही जीवन मोक्ष होगये सादी साहिब की तो पैग़म्बरों में गणना ही है कौन नहीं जानता—

दरश्यार सिहतन पैग़म्बरान्
क़ौलेस्त की जुमलगीं वरानन्द ॥
हरचन्द किला नबीय बादी ।
फिरदोसीये अनवरी ये सादी ॥

अर्थात् कविता में तीन साहिबों को फ़ारसी में पैग़म्बरी का पद प्राप्त हुआ है जिनका नाम फिर दोसी अनवरी व सादी है--मसनवीको भी दूसरा क़ुरान बतलाया है कहते हैं :—

मन चिह गोयम वस्फ़ आन आली जनाब ।
नेस्त पैग़म्बर बले दाउद किताब ॥
मसनवीये मौलवीये मानवी ।
हस्त क़ुआँ दर ज़ुबाने पहिलवी ॥

इसी प्रकार सैकड़ों बड़ाइयां सुना देते हैं परन्तु जब कभी उनकी किताबों से निकाल कर अशआर या

जुमले उनके सम्मुख रक्खे जाते हैं जिसमें इसका निषेध पाया जाता है और उसका करने वाला पापी बताया गया है तो झट कह देते हैं कि वह कोई पेग़म्बर अथवा औलिया नहीं थे हम उनका कलाम मान नहीं सकते ख़ैर मानना न मानना आपके आधीन है समझा देना अपना काम है यदि " स्वस्य च प्रयमात्मना" "हरकि वर ख़ुद विपसन्दी वदरी गरान विपसन्द" बुद्धी और विचार से काम लेंगे तो उन पुर्वजों की सम्मति से प्रतिफल निकालने को काफ़ी होंगे।

लीजिये देखिये विचार कीजिये सादी बोसतां में लिखते हैं:-

शुनी दम गो सफ़न्देरा बुज़ुर्गे।
रिहानीद अज़ दहानो दस्त गुर्गे॥
शिवंगह कर्दवर हलक़श चिमालीद।
रवाने गोसफ़न्द अज़वे विना लीद॥
कि अज चंगाल गुर्गं दार वूदी।
चुदीदम आखिरशख़द गुर्ग वूदी॥

अर्थात् एक ने भेड़िये से बकरी को छुड़ाया उसी समय उसके लिये कहा गया बुज़ुर्ग और जब रात्रि को जाकर उसके गले पर छुरी फेरी तो उस

बकरी की जान रोई और चिल्लाई कि मुझे भेड़िये से बचाया पर मैंने तुझे ही भेड़िये पाया मेरी जान वैसे जाती सो ऐसे भी गई अर्थात् उस समय बुज़ुर्गी के स्थान पर प्रयोग हुआ गुर्ग का और भी लिखा है।

यके दर ब्याबाँ सगे तिशना याफ़्त।
बिरूं अज़र मक़दर हयात शनयाफ़्त॥
कुलह दलू कर्द अम्मामंह केश।
चुं हब्ल अनदरान बस्त दस्तार ख़ेश॥
ख़िदमत मियां बस्तु बाज़ू कुशाद।
सगे नातवा रादमे आब दाद॥
बख़िरदाद पैग़म्बर अज़ हाल दीर।
किदाविर गुनाहान ओ अफ़ू कर्द॥

अर्थात् एकने अति प्यासे कुत्ते को जब वह प्यास के कारण मरा जाता था अपनी टोपी का डोल और अपनी पगड़ी की रस्सी बनाकर उसे पानी पिलाया और उसकी जान बचाई इसके बदले में उसको पापों से क्षमा कर देने की आवाज़ सुनाई दी क्या अच्छा लिखा है—

मायाजार मोरे कि दाना कशस्त।
किजां दारों जान शीरीं खुशस्त॥

अर्थात् चींटी को भी नहीं सताना चाहिये इस लिये कि वह जान रखती है और जान का खुश रखना ही अच्छा है इससे अधिक और क्या निषेध चाहिये आगे तो नितान्त ही स्पष्ट कर दिया है और साक्षी में फिरदोसी को भी लिया है—

चिह खुश गुफ़ फ़िरदोसिये पाक ज़ाद।
किरहमत बरआं तुर्वते पाकवाद॥
जान मया जार हरचे ख़्वाही कुन।
कि दर शरी अतमा ग़ैर जीं गुनाहेनेस्त॥

अर्थात् जीवधारी को मत सता और जो चाहे सो कर क्योंकि शरीअत में इससे अधिक और कोई पाप नहीं है और साधारण रीति पर तो सैकड़ों स्थानों पर शिक्षा की है।

मयाज़ार मर्दो मकुनवर कहान्।
कि वरएकनमत मी नमानद जहान्॥

संसार परिवर्तनशील है इसलिये छोटों पर जुल्म मत कर और भी कहा है कि—

परवर्दः कुशतन नमरदी बुवद।
सितम दरपये दाद मर्दी बुवद॥

अर्थात् पाले हुए को मार डालना कोई वीरता नहीं कहाती दया के पश्चात् निष्पाप सताना

सर्द सिहरी कही जाती है आगे निज़ामी साहब बतलाते हैं—

ख़ूनाबये ख़ुद ख़ुर कि शराबे बेह अज़ीं नेस्त।
दन्दान बजिगर ख़ुर कबाबे बेह अज़ीं नेस्त॥
दर कांबो हदाया मतबां याक़ ख़ुदा।
दर मुसहफ़ दिलवीं कि किताबे बेह अज़ीं नेस्त॥

अर्थात् यदि तुझे शराब पीना है तो अपना निरमल रक्त पी, अर्थात् हर प्रकार के परोपकार में कष्ट उठा और यदि कबाब खाना है तो दांतों से अपना कलेजा चबा, यदि ईश्वर की तलाश है तो कुंज और हदाया में नहीं मिल सकती है अपने दिल के कुरान में देख, इसलिये कि उससे बढ़कर और कोई शराब कबाब किताब नहीं है कैसे प्यारे शब्दों में उपदेश है जो प्रसिद्ध कवि उर्फ़ी के उस बचन का उपवाद है कि-

गर तेग़बदस्त आयद बरन फस दो दस्ती ज़न।
गर संग ब दस्त आयद बर शीशये हस्ती ज़न॥

अर्थात् यदि तेरे हाथ तलवार पड़ जावे तो दोनों हाथों से चित्त की मूढ़ वृति पर मार जो तुझे बुराइयों की ओर ले जाता है और यदि पत्थर तेरे हाथ पड़ जाय तो अहंकार रूपी शीशे पर मार कर उसे चकना-

चूर कर दे क्योंकि अहंकार अभिमान एक दिन सब को नीचा दिखाता है आगे बताया है

काबा बुन गाहे ख़लीले आज़ुरस्त।
दिल गुज़र गाहे जलीले अकबरस्त॥
दिल बदस्त आवर कि हज्जे अकबरस्त।
अज़ हज़ारां काबा इकदिल बेहतरस्त॥

अर्थात् बतलाया है—काबा ख़लील आतिश परस्त का बुनगाह है परन्तु दिल ईश्वर पाक का गुज़रगाह है इस कारण मन को वश में कर यही बड़ा हज है और हजारों बार हज जाने से एक दिल को खुश रखना बेहतर है—

मै खुरो मुसहफ़ बिसोज़ो आतिश अन्दर कावाज़न।
साकिने बुतखाना बाशी ओ दिलाज़ारी मकुन॥

अर्थात् चाहे शराब पीवे चाहे कुरान शरीफ़ को जला देवे चाहे कावे में आग लगादेवे चाहे बुत खानों में पड़ा रहे परन्तु दिल को न सतावे सोचो जब दिल दुखाना इतना पाप है तो जान से मार डालना कितना अधिक गुणा पाप होगा मौलाना रूम ने लिखा है—

हज़ार कुञ्ज किनाअत हज़ार गंज करम ।
हज़ार ताअत शबहा हज़ार बेदारी ।
हज़ार सिजदो दर हर सिजदारा हज़ार नमाज़ ।
क़बूल नेस्त अगर ख़ातिरे बआज़ारी ॥

अर्थात् चाहे जितना संतोष करो, चाहे जितनी बख़्शिश, चाहे जितनी रातें जगो, चाहे जितना सिज़दा करो और नमाजें पढ़ो कुछ स्वीकार नहीं है यदि दिलाज़ारी करो क्योंकि उन्होंने जाना था कि दिल-तोड़ने के बदले में चाहे कोई कितने ही लाल और मोती देवे वह सब निरर्थक हैं इस हेतु कि हमने मोती थोड़े ही तोड़ा है जो उसका बदला हो जावे जैसा कि-

गर सद हज़ार लालो गुहर मे दिही बिहसूर ।
दिलरा शिकस्तई न कि गौहर शिकस्तई ॥

अथवा उन्होंने कहीं हदीस से देखा होगा—

काते उल शजर ज़ाबे उल बक़र ।
दाय मुल ख़ुमर नायमुल सहर माने उल मतर॥

अर्थात् हरा भरा पेड़ काटने वाला गाय का मारने वाला, शराब का पीने वाला, प्रातः काल का सोने वाला, वर्षा होने को मना करनेवाला । यह पांच मोक्ष के भागी नहीं हैं अथवा उन्होंने यह विचारा होगा कि जब

अहराम में मारने का निषेध है और बत-लाया है कि ऐ ईमानवालो ! न मारो शिकार जब तुम अहराम में हो तो कोई पाप की बात है यदि कोई अच्छी नेक बात होती तो किसी भली बात करने की मनाई किसी देश और काल में नहीं होती है अथवा सूरह हज पर ख्याल पहुंच गया होगा कि—

लनयनाला अल्ला हुलहूमहा वला दया
उनहा वलकिन यनालहुत तकवा मिनकुम

अर्थात् ऐ दीनदारो ! ईश्वर को तुम्हारा भेजा हुआ मांस और लोहू नहीं पहुंचता है परन्तु पहुंचती है परहेजगारी तुम्हारी अथवा यह समझकर कि पैगम्बर इस्लाम की खुराक सामान्यतया खजूरें और मीठा पानी ही था अथवा खातिमुल रसूल महम्मद मुस्तफ़ा का सच्चा ख्याल अक़सीर हिदायत के पृष्ठ २९७ में देखा होगा कि ऐ लोगो तुम संसारी स्वादों में फंसे हो उसे स्मरण करो जो इन लज्जतों का विनाश करती है अर्थात् मौत। फिर कहा है कि मेरी उम्मतिमें सबसे बेहतर वे लोग हैं जो भूसे से निकाल कर गेहूं खायें यह हराम नहीं कभी कभी खाना दुरुस्त है

परन्तु यदि सदा की आदत कर लेंगे तो तबीयत में अच्छे खाना खाने की इच्छा प्रबल होजावेगी अथवा इसी किताब पृष्ठ ५६९ पर लिखा देखा होगा कि सबसे बड़ा दर्जा सागपात और जौ खाने वाले का है।

अथवा सरसय्यद अहमदखां साहिब की रसूम हिन्द के पृष्ठ १७६ सन् १९०१ में देखा होगा जहां लिखा है अय आदम और हव्वा तुम बहिश्त में रहो और यहां के सारे मेवे खाओ या उसी किताब के पृष्ठ १७८ पर देखा होगा जहां लिखा है कि जब आदम और हव्वा का क़यास जमीन पर हुआ तो हज़रत जिबरईल ने कुछ गेहूं की रोटी और लकड़ी पहुंचाई और खेती करनी सिखलाई—

अथवा कुरान शरीफ़ सिपारा १—सूरतुलबक़र रकूअर मंज़िल १ आयत २१ देखी होगी।

अललज़ी जालालकुम वलआरदे फराशउं वससमाउन विनाउन वअनज़ला मिनस्समाये माउन फ़अख़रजा बिही मिनिससमरात रज़क़ना लकुम।

अर्थात् बनाया तुमको ज़मीन बिछौना और आस्मान इमारत, और उतारा आस्मान से पानी फिर निकाले उससे मेवे खाना तुम्हारा।

अथवा कुरानशरीफ़

के सिपारा	३०	—सूरत	अबस रकू	१	आयत	२३ से ३२
,,	,,	८	,, इनआन मञ्जिल २ रकू१६		,,	१४१—१४२
,,	,,	७	,, ,, ,, २ ,, ११		,,	२९
,,	,,	१४	,, नहिल—रकू	१	,,	१०
,,	,,	११	,, यूनस— ,,	२	,,	२३
,,	,,	२६	,, काफ़——		आयत ६	१०
,,	,,	१४	,, हजर रकू	१	,,	१८
,,	,,	२७	,, रहमान——		आयत	९—१२

इत्यादि अनेक आइतों पर जिन में अन्न और फल खाना बताया है इसी कारण मनको रोकने और विषयों से बचने और प्राणीमात्र को ईज़ा रसानी से बचने पर बल देते हुए समझाया है कि—

अज़ीज़ा मुर्गो माहोरा मयाज़ार,
नवाशीता ख़ज़िल तू पेशदादार।

अहिस्ता ख़िराम बल्क मख़राम
ज़ेरे क़दमत हज़ार जानस्त ॥

अर्थ-हे प्रियवर ! तू मुर्ग़ और मछली को मत मता इसलिए कि तुझे ईश्वर के सन्मुख लज्जित न होना पड़े, धीरे २ चल वरिक मत चल इसलिए कि तेरे पैर तले चींटी आदि हज़ार जानें हैं वे मर न जायें-वे जानते थे कि पशुओं के वध से बहुत न्यून संख्या के पुरुषों का पेट भर सकता है और उनके जीवित रहने से सहस्रों गुण अधिक दुग्ध घृत और उनकी सन्तान द्वारा उत्पन्न हुए अन्न से पालन होसकता है इसकारण तनिक से जीभ के स्वाद के अर्थ आत्मा को कांटों में घसीटने की मत कोशिश करो स्मरण रक्खो जैसी कृमी की गति आपके पैर तले है वही दशा आपकी हाथी के पैर के नीचे है इसलिये-

गुस्ताख़ सकुन तु नफ़्स खुदरा
गो सालये पीर मस्त खुदरा.
गर नफ़्स यिख़्वाहद अज़ तो गुलकन्द
खाकश विदिही तु लुक़्मये चंद ॥

अर्थात् तू मन के वसमें न हो वरन् उसे अपने बस में रख जो नफ़्स तुझसे गुलकन्द चाहे तो उसके

स्थान में उसे थोड़ी सी धूल दे कि इसे फांक अर्थात् रसना इन्द्रिय को वस में रख और भी बताया है—

हरकि अन्दर दाम नफसस्तो हवा।

अहिल शैतानस्तवै अहिले खुदा॥

अर्थात् जो इन्द्रीजीत नहीं है वह आस्तिक ईश्वर का माननेवाला नहीं है वरन् शैतान है मन की इच्छा के विरुद्ध कार्य्य करते रहने से वह वस में होजावेगा और जिन भोगों की आज उत्कण्ठा हो रही है कल उन्हीं से घृणा होजावेगी आंख बधगृह के देखने, कान न झिलबिलाहट और चिल्लाहट के शब्द सुनने से भागेंगे, नाक उस ओर जाते हुए दवाना पड़ेगी जिह्वा उस ओर देख कर थूकेगी तव जो आज नाज घी दूध की गरानी होरही है जिससे हिन्दू आर्य्य ईसाई मुसल्मान सबही को कष्ट होरहा है दूर हो जावेगा। इस कारण दीन पशुओं पर कृपा और दया करो उनके सताने से बचो सोच समझ कर अपने आक्षेपों का उत्तर लो यदि उत्तर संतोषजनक हों और आपकी आत्मा मान जावे तो फिर उसका हनन मत करो स्मरण रक्खो आत्मघाती मर कर महा नीच

योनियों को प्राप्त होता है परमेश्वर न्यायकारी फल प्रदाता है उसका ख्याल और मौत का ध्यान कभी न भूलना चाहिये।

बाईबिल में लिखा है–

To what purpose is the multitude of your Sacrifices unto me said the lord, "I am full of the burnt of rings and the food of the fat beasts. I delight not in the blood of goats sheep and cows."

अर्थात्–ईश्वर ने आज्ञा दी है कि किस अभिप्राय से तुम बलिदान करते हो मैं सोख्तनी क़ुर्बानियों और मोटे जानवरों के खाने से तृप्त हूं मैं प्रसन्न नहीं होता हूं रक्त बहाने से भेड़ बकरी और गायों के हा! आपके प्रभू ईसा बतलाते हैं कि मैं दया चाहता हूं न कि बलिदान॥

प्यारे मसीही भाइयो! मेरा सारा शरीर थरथरा गया जाड़ा सा आ गया रूंगटे खड़े हो गये जब मैंने ईसाई धर्मावलंबियों के बधगृहों का हाल एक पुस्तक में पढ़ा। हा! कितने पशु पक्षी केवल ईसाई भाइयों के अहार के निमित्त नित्यप्रति मारे जाते हैं एक बार

जानवरों के वध के सम्बन्ध में उन पङ्क्तियों से जो कासमोपोलिटन समाचारपत्र में छपी थीं प्रकट होता है कि एक वध-गृह में दश सहस्र पशु दुहरी लाइन में पन्द्रह मील तक जा रहे हैं और उनके पीछे २० सहस्र भेड़ बकरियां २० मील की पंक्ति में जा रही हैं उनके पीछे २७ सहस्र सुअर १६ मील तक और उनके पीछे तीस सहस्र कबूतर आदि पक्षी ६ मील तक दिखाई देते हैं इन सारे जानवरों के योग में जो अटकल से ५० मील लम्बी जगह में हो और जिनके निरन्तर चलने से एक स्थान से दूसरे स्थान तक दो दिन आपके सामने होकर निकलने में खर्च हो इतने जानवर (स्वक एन्ड को) वध-गृह में एक ही दिन में बध किये जाते हैं। इससे अनुमान करलो कि इस हिसाब से आमर्स से लिपटन आदि बड़े बड़े वध-गृहों में कितने नित्य मारने के लिये इकट्ठा किये जाते होंगे और इनके अतिरिक्त छोटे छोटे बध गृहों का तो वर्णन ही क्या है। जिसकी संख्या केवल लण्डन में ही चार सौ है दयालु ईश्वर के बन्दो ईसाई भाइयो! आप क्या इतनी हिंसा और निरपराधी जीवों का बध देखते हुये इन दीन

पशु पक्षियों पर दया नहीं करोगे मेरी प्रार्थना पर ध्यान दो-(पद्य)

पशुओं की हड्डियों को अब ना नयर से तोड़ो।
चिड़ियों को देख उड़ती छर्रे न इन पै छोड़ो॥
मज़लूम जिस को देखो उसकी मदद को दौड़ो।
ज़ख्मी के ज़ख्म सीदो और टूटे उज्व जोड़ो॥
बागों में बुलबुलों को फूलों को चूमने दो।
चिड़ियों को जंगलों में आज़ाद घूमने दो॥
तुम ही को बस दिया है इक हौसिला खुदा ने।
जो रस्म अच्छी देखो उसको लगो चलाने॥
लाखों ने मांस छोड़ा सब्ज़ी लगे हैं खाने।
और देम्परस जल से हरज़ा लगे रचाने॥
इन में भी जान समझ कर इनको ज़कात देदो।
यह काम ख़ैर का है तुम इसमें साथ देदो॥

क्या आपने नहीं सुना है कि प्रसिद्ध कवि वर्ड्सवर्थ के यह शब्द हैं कि हमारी खुशी और हमारे अभिमान में किसी प्राणी जीवित के कष्ट का लेशमात्र भी नहीं होना चाहिये—इसलिये

गावान ख़रान बार बरदार।
बेह अज़ आदमियान मरदुम आज़ार

अर्थात् जो मनुष्य अन्यों को दुःख देते हैं उनसे

बोझा ढोने वाले पशु अच्छे हैं। ख्याल करके मनुष्यों के कष्ट को जो उनको दूध घी अन्न के महंगे होने से हो रहा है दूर कीजिये और ईश्वर आज्ञा का पालन कीजिये आपके यहां तो स्पष्ट शब्दों में कुरबानी का निषेध है तो फिर मांस तबर्रुक (प्रसाद) भी नहीं हुआ तो फिर क्या इतना अन्याय पशुओं इत्यादि पर करके घी दूध महंगा करने के कारण बनते हो। अब आगे बहुत से प्रश्नों आक्षेपों के उत्तर लिखे जावेंगे उन्हें पढ़कर (परिणाम) निकालिये।

१—ज्ञात होता है कि हिन्दू वा आर्यों के पूर्व पुरुष मांस का अवश्य सेवन करते थे तब तो इनकी किताबों में इसका निषेध लिखा है क्योंकि बिला प्राप्ति के निषेध नहीं होता और क्या कोई ऐसी रीति प्रचलित है जिससे यह पता चले कि हिंदू मुर्दे को छूवा तक बचाते थे।

उत्तर—महाभारत से प्रथम के पुरुष तो नहीं खाते थे हां पश्चात् वामी अवश्य खाने लगे थे जैसा कि प्रथम बतलाया गया है परन्तु इस बात का निषेध जिस पुस्तक में है उस पुस्तक के बनने से

पहिले खाते थे ठीक नहीं है क्या अपूर्व विधि अर्थात् प्राप्त से प्रथम निषेध नहीं होता क्या कोई पिता वा गुरू बालक को नहीं सिखाता है कि बेटा जुआ मत खेलना मदिरा न पीना झूँठ न बोलना क्या बालक शिक्षा देने से प्रथम ज्वारी शराबी और झूठा था इस लिये यह आक्षेप ठीक नहीं रहा। दूसरे प्रश्न का उत्तर यह है कि यदि आप विचार दृष्टि से देखें तो इनकी रीति तो लगभग आर्य्य हिन्दू प्रत्येक बिरादरी में पाई जाती है जब किसी मृतक के साथ दाह करने जाते हैं तो चाहे वह सम्बन्धी हो, चाहे टोला बस्ती का हो, चाहे उसे छुआ हो, चाहे पास तक न गया हो, परन्तु सब ही नहा कर घर को लौटते हैं, कोई २ तो दूसरी बार अपने घरके द्वार पर नहाकर घर में जाते हैं नहीं तो हाथ पांवऔर पर सब ही धो डालते हैं यह पुरानी रीति आजतक चली जाती है परन्तु बाहरी हिन्दू संतान अपने प्यारे के मृतक शरीर से तो इतना बचें और कई दिन में शुद्ध हों परन्तु

पशुओं के मृतक शरीरों को चौका लगाकर पकावें और आप नहा धोकर भोग लगावें और मन में कुछ भी ग्लानि न करें। कवित्त—

मानुस कोई मरे तो कहैं चलो लेचलो लेचलो देर न लावो। देर भये बस्याने लगे तुम शीघ्र ही माटी ठिकाने लगावो। मेष अजा हरनादि को मार के बिक्रमसिंह घरे निज लावो। चील और गिद्ध स्यार की भांति सभी तुम माटी को बांट के खावो॥

२–क्या बता सकते हो कि मांस खाने का प्रभाव मन और बुद्धि आदि पर पड़ता है यदि मांस खाता रहे और शुभ कर्म करता रहे तो क्या हानि है।

उत्तर–यह बात सिद्ध हो चुकी है कि मन अन्नसे बनता है जैसे जैसे भोजन मनुष्य करता है वैसे २ गुणों को धारण करता जाता है इस लिये भोजन के लिये तो अर्थ तक की पवित्रता बताई गई है भोजन तीन प्रकार का सात्वकी, राजसी, तामसी होता है अधिक मिर्च खटाई खाने से क्रोधी स्वभाव हो जाता है। अब मिर्च खटाई तक का इतना प्रभाव पड़ता है तो मांस भोजन से क्या

नहीं पड़ेगा। बतलाया गया है कि पशुओं का मांस खाने से पशुपन बढ़ जावेगा एक कविने लिखा है जहां दीपक जलता है वहां अंधकार दूर होता जाता है और उससे काजल अंधेरी और काली वस्तु उत्पन्न होती है जैसा कि:—

दीपो भक्षते ध्वान्तं कज्जलंच प्रसूयते ।
यदन्नं भक्षतेनित्यं जायते तादृशीप्रजा ॥

बस सिद्ध होगया कि मांस खाने से मन, बुद्धि दूषित हो जाती हैं तब उससे दया धर्म के काम होना ही असम्भव हैं । जब मनुष्य अपने पेट में पशुओं का रक्त लोहू भरता जावे तब वैसे शेर, भेड़िये, कुत्ता, बिल्ली, पशु, धर्मात्मा नहीं बन सकते इसी प्रकार इनसे आशा रखना भूल है जहां मांस, हड्डी, रक्त भीतर गया वहां हृदय शुद्ध नहीं रह सकता जो यह कहते हैं कि ईश्वर भजन और विद्या ग्रहण करता रहे यदि हृदय शुद्ध न हुआ भी तो न सही उनको जान लेना चाहिये कि बिना वास्तविक हृदय शुद्ध के यह शेष सब निष्फल हैं और भले काम होना ही दुस्तर है जैसा कि :—

यदि भवति त्रदण्डी नागिन मुण्डी जटीवा
यदि पठति वेदशास्त्रं गीतनारदं सुलम्वा।
यदिवसति गिरिहायां कन्दमूलं फलम्वा
यदि हृदय न शुद्धी सर्व एतद्द बिटम्वा॥

जिसका अर्थ यह है चाहे त्रदण्ड धारण करे, चाहे नंगा रहे, चाहे वेदशास्त्र क्यों न पढ़े, चाहे जंगल पहाड़ों पर जाकर क्यों न वसे और कन्दमूल फल आहार करे यदि हृदय शुद्ध नहीं है तो यह सब पाखण्ड और बनावट है। इस कारण हृदय की शुद्धी परमावश्यक है जिसका रहना मांसाहारी होकर असम्भव है क्या आप ने नहीं देखा एक कठा आम की गुठली बोते हैं और उसमें कलमी आमकी डाल बांध कर कलम लगाते हैं तो फिर वह पेड़ कठा नहीं रहता वरन् फल फूलकर कलमी बन जाता है और कलमीही फल लाता है अर्थात् जिसकी कलम लगाई जाती है वैसाही होजाता है इसी प्रकार जब मनुष्य के शरीर में पशुओं की कलमें लगाई जावेंगी तो आप स्वयं ही सोचिये कि क्या परिणाम होगा।

३–द्वितीय उत्तर से ज्ञात हुआ कि पशुओं के खाने से पशुत्व आता है तो विना कहे इस हेतु से पता लगा कि मनुष्य उत्पन्न करने के अर्थ मनुष्यों का खाना अच्छा सहज लटका है। फिर क्यों मनुष्यता पैदा करने के अर्थ बड़े बड़े उपाय किये जावें। मनुष्यों का मांस खाया करे। वाहरी बुद्धि के पशुओं के खाने से पशुपन आता है इसे कौन बुद्धिमान स्वीकार करेगा और मनुष्याहारी बनेगा।

उत्तर—क्रोधित न हूजिये ठहरिये और उत्तर लीजिये यदि तसल्ली न हो तबही आपेसे वाहर हूजिये मैं आपको सिद्ध करके दिखाऊंगा और आपको तसल्ली दिलाऊंगा अवश्य मनुष्यता आवेगी परन्तु प्रथम विचार तो लीजिये कि मनुष्यता और पशुता क्या है प्रत्येक भाषाके ज्ञाताओं ने बताया है कि यदि पुरुष में धर्म और सद्गुण नहीं हैं तो वह पशु के ही समान है

तु इसांन नदानद बजुज़ खुर्दोख्वाब।
कुदामश फ़ज़ीलत बुवद बरदवाब॥
बनुक्त आदमी वह तरस्त अज़ दवाब।
दवाव अज़तो बिह गर नगोई सवाब॥

अर्थात् यदि मनुष्य खाने और सोने के अतिरिक्त और नहीं जानता तो चौपायों पर कोई वशेषता नहीं रखता यह केवल उत्तम वाणी के कारण पशुओं से अच्छा है यदि यह गुण उसमें नहीं है तो पशु उससे अच्छा है।

१—येषां न विद्या न तपो न दानं,
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मृत्युलोके भुविभार भूता,
मनुष्य रूपेणमृगाश्चरन्ति॥

२—आहार निन्द्रा भय मैथुनञ्च,
सामान्यमेतत पशुभिर्नराणाम्।
धर्मोहितेषामधिको विशेषो,
धर्मेण हीना पशुभिः समानाः॥

१—जिनमें विद्या, तप, ज्ञान, शील, गुण, धर्म नहीं है वे संसार में धरती पर बोझ हैं और मनुष्य के रूप में पशुवत् विचरते हैं

२—खाना, सोना, भय, मैथुन पशुओं में मनुष्यों की अपेक्षा अच्छा है मनुष्यों को कितना प्रबन्ध और

सोच विचार और परिश्रम करना पड़ता है उनके लिये हर बात को खुला हुआ मैदान है हरी हरी घास खाने को और बढ़िया विचित्र खाल पहिनने को ईश्वर की ओर से मिली है। इससे ज्ञात हुआ कि जो मनुष्य शुभगुण और पवित्र धर्म से युक्त हैं वेही मनुष्य कहलाने योग्य हैं मनुष्य का अर्थ ही विचारवान है इसलिये यदि मनुष्य वा मनुष्यताज्ञानी है तो पवित्र गुणों को शुद्धाचारी पुरुषों से अपने में धारण करो अनुचित क्रोध भी मनुष्यपन से पृथक है देखो उलविया फ़िरक़े वाले जो हज़रत अली की औलाद से हैं वे बतलाते हैं कि हज़रत अलीका कथन है जो जनाब मुहम्मद साहब के भाई और जमाई भी थे

"लात जाल्लू बतूनकुम मकाबिरूल हैवानात"

अर्थात् मत बनाओ अपने पेटों को पशुवों की क़बरें,, बहुवचन इसलिये लाये कि क़बर में एक मुर्दा दफ़न होता है मनुष्य के पेट में बहुतेरे दफ़न होरहे हैं और क़बर नहीं वरन क़बरिस्तान बनगये हैं।

४–ईश्वर ने पशु पक्षी आदि मनुष्यों के अर्थ ही बनाये हैं इसलिये इनके खाने में भी पाप नहीं हो सकता।

उत्तर—ईश्वर ने तो इसलिये नहीं बनाये हां मनुष्यों की धोखाबाज़ी स्वार्थपरायणता चालाकी यदि कहते हो मैं मान लेता। यह पक्षपात जाति और मत का मनुष्यों में ही पाया जाता है नहीं तो परमेश्वर की तो अपनी सम्पूर्ण प्रजा पर एकसी दृष्टि। है उसने तो प्रत्येक को उसके कर्मानुसारही फल दिया है हां मनुष्यों में अपने और अपने का पक्ष अवश्य पाया जाता है जब ब्राह्मणोंने नियम बनाये तो ब्राह्मणों को अदण्ड ठहराया, मुसलमानों ने अन्य मतवालों को काफ़िर बताया हमारी न्यायशाली गवर्नमेंट ने भी जिसने न्याय को अन्त तक पहुंचाया है और प्रजा और व्याघ्र को एक घाट पानी पिलाया है जाब्ते फौजदारी में हिन्दुस्तानियों की अपेक्षा यूरोपियन की कुछ अधिक रियासत रक्खी है परन्तु इस पक्षपात से पृथक केवल वेदही हैं कि जिसमें प्राणीमात्र के साथ भलाई करने का उपदेश है देखिये कितना बढ़िया न्याय है मनुष्य को परमेश्वर ने स्वतन्त्र कर्ता कर्तव्य औरभोक्तव्य उभय योनि में उत्पन्न किया बुद्धि जैसा बढ़िया पदार्थ दिया उसे अधिकार है चाहे योग्य बने चाहे अयोग्य

शुभ कर्म करे चाहे अशुभ जैसे वर्तमान राज में पाप के बदले कारागार जाना पड़ता है इसी प्रकार परमात्मा के नियमानुकूल पशु पक्षी आदि योनियों में जो भोक्तव्य योनियां हैं दण्ड भुगतने के लिये भेजा जाता है यदि कोई उस बन्दी को जिसकी अभी कारागार में अवधि शेष है मारे वा मारडाले तो वह वर्तमान नियमावली के अनकूल साधारण दण्ड अथवा प्राणदण्ड का भागी होता है जो मनुष्यकृत है जिसमें मनुष्यों का पक्ष विद्यमान है तो ईश्वरीय नियम के अनकूल जिसमें किसी का लेशमात्र पक्ष नहीं है जिसने पशु पक्षी आदिरूपी कारागार में जीवों को भेजा है बिना अधिक समाप्त हुए अथवा समाप्त होनेपर अपने अधिकार के विरुद्ध यदि कोई मारडालेगा तो दण्डका भागी क्यों नहीं होगा। इसकारण वेदों में अनेकान स्थान पर "यजमानस्य पशूनपाहि" याद आया है कि पशुओं की पालना तथा रक्षा करना उचित है प्यारे मित्रो! यदि पशु नियम बनाते और जैसा वर्ताव आज तुम उनके साथ कर रहे हो वह तुम्हारे साथ करते तब तुम्हें आटे दाल का भाव मालूम होता और अपने पेट को उनके रक्त और हाड़ों से अपवित्र बनाने का स्वाद जान पड़ता—

५–यह कैसे सिद्ध हो कि मांस अपवित्र वस्तु है हम उसे उस समय तक पवित्र कहते हैं जब तक जीव उसमें स्वयं नहीं निकल जाता हममुर्दः (मराहुआ) नहीं खाते वरन् जिन्दः (जीताहुआ) मारकर खाते हैं

उत्तर–यह तो आपने मान ही लिया कि यदि ईश्वर के नियमानुसार जीव शरीर से निकलजावे तो वह शरीर अपवित्र होजाता है अर्थात् मरे हुए को नहीं खाना चाहिये । अब अन्तर केवल इतना रहगया कि ईश्वर की आज्ञा से जो मरे वह हराम (अभक्ष)होजाता है परन्तु यदि आप अपनी आज्ञा से मारें तो वह हलाल (भक्ष) होता है मानो आपकी आज्ञा ईश्वर आज्ञा से बढ़ जाती है प्यारे मित्रो यह भूल है हमारा जीव शरीर से स्वयं निकले अथवा किसी घातक के हाथ से निकाला जावे शरीर दोनों दशाओं में मृतक कहलायेगा और एकसाही अपवित्र होगा स्वय मरे और मारे हुए मांस में अन्तर नहीं होसकता आप दोनों प्रकार के मांस की परीक्षा कीजिये तब ज्ञात हो सकता है आपके पास पवित्र,अपवित्र सुगन्धित दुर्गन्धित पदार्थ की पहिचान करने की कौन सी कसौटी

है आप इस कसौटी पर कसकर परखिये तो सही यदि आप नहीं जानते तो मैं बतलाता हूं घ्राण इन्द्रिय अर्थात् नाक आपके पास एक बड़ी कसौटी है जो प्रत्येक सुगन्धित और दुर्गन्धित वस्तु की परीक्षा कर देती है दूसरी वस्तु अग्नि है जो प्रत्येक वस्तु के परमाणु सूक्ष्म बनाकर वायु की सहायता से नाक तक पहुंचा सकती है इसलिए जिस पदार्थ की जांच करना हो उसको अग्नि पर रखिये उसके परमाणु छिन्नभिन्न होकर वायु के योग से आप की नाक के निकट पहुंचकर बता देंगे, इसकी परीक्षा नित्यही आपको हुआ करती है पजावा और हवन के पास जाने से भी आपको पता लगा होगा और बीसियों वार हिन्दुओं के मुर्दे जलाने पर भी आक्षेप उत्पन्न हुआ होगा कि जहां मुर्दे जलाये जाते हैं कैसी चिरान्द आती है सोचिये वह चिराइन्द किसकी है वही हड्डी और मांस की चिराइन्द का आना स्वीकार करता हूं गो मैं उसकी निवृति घृत कपूर चन्दनादि सुगन्धित पदार्थों को उसके साथ जलाकर जानता हूं जिससे सिद्ध है कि यदि मांस अग्नि पर

रक्खा जावे तो चिराइन्दको उड़ावेगा और नाक उसकी दुर्गन्धि को सह न सकेगी आप कहेंगे कि अब कैसे सह रहें हैं तो प्रियबन्धु! सहते वेही हैं जिनके मस्तक ऐसी चिराइन्द को सहते २ आदी होगये हैं जिनके उदाहरण आपको बहुत से मिल सकते हैं इससे सिद्ध हुआ कि मांस अपवित्र वस्तु है। द्वितीय यह भी ध्यान रखिये कि कोई वस्तु अपने मूल को नहीं छोड़ती मांस जिसकी उत्पत्ति रज और वीर्य अपवित्र वस्तु से पड़ी है वह पवित्र कैसे होसकता है रज और वीर्य्य से बनामांस तो नापाक है। यार? किसलिये फिर शौक से आप उसे खाते हैं। तीसरे शरीरमें कौन अङ्ग आपने पवित्र समझा है यह और बात है कि आपने थूक खखार भरे हुए मुखको रवि शशि से समतादी हो और उस चन्द्र बदनी की चाह में वर्षों कष्ट भोगे हों पर देखिये कि नाक कान आंख मुख गुदा मूत्र स्थानसे जो निकलता है सब अपवित्र है सम्पूर्ण शरीर से पसीना अपवित्र निकलता है जबतक जीव शरीर में रहता है तब तक वह अभ्यन्तरीय दशा को शुद्ध बनाये रखता है। उसके निकल जाने पर भी अशुद्ध न समझना

आपकी योग्यता है जो अपने प्यारे से प्यारे के शरीर को चाहे वह स्वयं मरा हो चाहे मारा गया हो तुरंत ही घर से प्रथक करना ही उचित समझती है।

६—देखो हम ईश्वर की राह में कुर्बानी करते वा देवी जगदम्बा पर बलिदान करते हैं और वह प्रसन्न हो होकर हमारी मनोकामनायें पूर्ण करती हैं। वैसे खाना चाहे पाप भी होता परन्तु बलिदान किया हुआ तो तबर्रुक कहलाता है इसमें क्या दोष है जो न हिन्दू मुसलमानों सभी में मज़हब दुरुस्त है।

उत्तर—हां साहब यही तो टट्टी की आड़ में शिकार (आखेट) खेला है, क्या हंसी आती है मुझको हज़रते इंसानपर, कार बद तो खुद करें लानत करें शैतानपर, चालतो अच्छी चले सोचा था कि लोगधोखा खावेंगे और खा भी गये पर स्मरण रक्खो कि ताड़-जाने वाले भी विचित्र होते हैं उड़ती चिड़ियां पहि-चानते हैं मैं ऐसे पुरुषों को उस समय बड़ी प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखता कि यह बेचारे धोखे में फंसे हैं वा इनकी इतनी ही समझ है जब वह जो बलिदान करते हिन्दू तो उसके शरीर को जला और मुसलमान दबा

देते स्वयं न खाते परन्तु जब वह स्वयं उसे खाने लगे तो मैं अवश्य कहूंगा कि इन पापियों ने ईश्वर और देवी को जिसे उपास्य (माबूद) बताते हैं जब दोष लगाने से नहीं छोड़ा तो औरको इनसे क्या आशा हो सकती है सामान तो रत्ती भर कम न हुआ खूब मूछों पर ताव फेर फरकर प्रसन्न होकर खाया और ईश्वर की प्रसन्नता का हेतु बताया। प्यारे भाई! यदि ईश्वर को बलिदान की आवश्यकता होती तो दीन पशु पक्षियों के मारने का तुम्हारी जिह्वा के स्वादार्थ क्यों आज्ञा देता तुम्हारी ही क्यों न भेंट लेता यह भी न सोचा कि खुदा ही अथवा देवी दोनों एक ही ईश्वर के नाम हैं दोनों ही सम्पूर्ण जगत के स्वामी और अधिष्ठाता माता पिता हैं और जिन जीवों का बलिदान होता है वह सब उनके बच्चे बेटे हैं जब ईश्वर वा देवी ही उन का रक्त पीती है वा मांस की भूखी है तो क्या अपने बच्चों को खानेवाली न हुई ऐसी दशा में उसे दयालू (रहमान) कहोगे वा डायन और सन्तान भक्षी बताओगे। पड़े पत्थर समझ पर ऐसी समझे भी तो क्या समझे।

७—वह जीव जिसका बलिदान होता है वह तो वैकुंठ में पहुंच जाता है इस वास्ते इसका करने वाला पापी नहीं हो सकता।

उत्तर—यह भी वही दशा है जैसे नागनाथ वैसे सांपनाथ। कोई जीव मनुष्य योनि में आये और मुक्ति के साधन किये बिना मुक्त नहीं हो सकता। क्या खूब जो अच्छे बुरे के ज्ञान की योग्यता न रक्खें और न जानें कि बद्ध और मोक्ष किस बाग़ की मूली हैं उनके मोक्ष का अपनी जिह्वा के स्वाद के लिये आपको ध्यान हो परन्तु अपने वृद्ध माता पिता जो बिचारे रात दिन मोक्ष के लिए बेचैन हों और तीर्थ, व्रत, हज़ रोजा संध्या और निमाज़ करते २ करते मरे जाते हों उनको इस सहज रीतिसे क्यों वैकुण्ठ नहीं पहुंचा देते। मेरी समझ में इसका उत्तर सिवाय चुप रहने और दांतों में अंगुली दबाने के और कुछ नहीं होगा। हाय स्वार्थता। तेरा सत्यानाश हो कहां कुन्ती जैसी माता अपने पुत्रों को दूसरों के पुत्रों को बचाने के ख्याल से बलिदानकरने को तत्पर थी राक्षस के ग्रास होजाने के अर्थ अपने पुत्रको दीन ब्राह्मणी के इकलौते पुत्रके बदले में

भेज दिया था कहां आजकल की माताये अपने बच्चों के जिलाने के विचार से अन्यों के बच्चे मुर्गा बकरा भैंसा आदि को चौराहे मसानी भवानी-कलैया आदि अनेकान स्थानों में कटवाती हैं इनसे अधिक और कुटिलता निर्दयता क्या हो सकती है।

इस से तो यही अच्छा होता कि जिस जिव्हा के स्वाद के अर्थ इतने ढोंग रचने पड़े अथवा जिनकी जिव्हा वश में नहीं आती तो वह अपनी जिव्हा काट कर खा जाते और यह झगड़ा ही मिटाते! हा! यह जीवों को वैकुण्ठ क्या भिजवा सकते हैं जब स्वयं ही नहीं जा सकते। भोले बुद्धि हीन भाइयों के अर्थ छल कपट का जाल फैलाया हुआ है सच तो यह है :—

बेशऊरों है पापी है सज़ा काबिल।

जानवर रोज नये जिनकी गिजा बनते हैं तब ही तो किसी ने जैसा का तैसा इन्हें उत्तर दिया है:—

साईं मारे राह सिधारे, तिसको कहैं हराम हुआ।
जिन्द को मुरदा करडाल, तिसको कहैं हलाल हुआ।
पढ़े नमाज रखें फिर रोज़ा, पराये पून का काढ़ लिया।
अगर बहिश्त मिले यूहीं, तो क्यों नहीं कुटुम्ब हलाल किया।

पशुश्चेन्हत: स्वर्गंज्योतिष्टोमे गमिष्यति।
स्वपितायजमानेन तत्र कस्मान्न हिंस्यते ।

जिसका अर्थ यही है यदि पशु बलिदान से वैकुण्ठ जाता है तो यजमान अपने पिता को मार कर क्यों वैकुण्ठ नहीं पहुंचा देता ।

८-ईश्वर स्वयं चाहता है कि मनुष्य पशुओं को खावें देखो उसने सैकड़ों मांसाहारी जीव ऐसे बनाये हैं कि वह स्वयं शिकार करके मांस खाते हैं अन्य के मारे हुए अथवा स्वयं मरे हुए के मांस को यदि उन्हें दिया जावे तो वह कदापि नहीं खाते जैसे शेर भेड़िये इत्यादि इसका क्या उत्तर देंगे ?

उत्तर-धैर्य धारण कीजिये सुनिये परमेश्वर न्यायकारी है इसलिये जीवों में से किसी का पक्ष न करके उनको कर्मानुसार यथा योग्य योनियों में भेजता है इसलिये उसने शेर भेड़िये आदि योनियों में भी उनके कर्मानुसार भेजा है । मनुष्य जिस इन्द्रियसे पाप करता है उसही द्वारा उसे भुगतना पड़ता है जिन वासनाओं को लेकर मरता है उसी के अनुसार दूसरा

शरीर मिलता है मनसे किये पापों का फल मनसे वाणी से किये को वाणी से काया से किये हुओं को काया से भोगता है जैसा कि:—

मानसं मनसैवायमुपभुंक्ते शुभाशुभम् ।
वाचावाचा कृतंकर्म कायेनैव च कायकम् ।

अर्थात् तमाम पशु पक्षी भोगरूप योनियों में हैं हैं। धर्म कर्म का उपदेश केवल मनुष्यों के लिए होता है क्योंकि पशु पक्षी धर्म नहीं कर सकते जैसे बन्दी स्वतन्त्रता से कार्य नहीं करसकता वह तो जब फिर मनुष्य होंगे तब ही मुक्त हो सकेंगे इसलिये पूर्व कर्मानुसार आवश्यक है कि वह मांस खावें परन्तु यह ठीक नहीं कि वह मारकर ही खावें दूसरों का मारा हुआ या मरा हुआ न खावें। वर्तमान में जो वह अधिकांश मारकर खाते हैं यह भी इन्हीं मांस भक्षियों का कारण है पूर्व काल में जो पशु मरजाते थे चमार आदि चमड़ा निकालकर पास के जंगल में फेंक देते थे शेर भेड़ियादि मांसाहारी जन्तु रात में आकर खा लेते थे जब से यह प्रथा बन्द होगई और वह

मुर्दा मांस चमार स्वयं खाने लगे तब से यह कहावत कि मरता क्या न करता और भूख क्या नहीं करालेती वह अन्यदीन निरबल पशुओं को अधिकांश मारकर खाने लगे। यह कहना कि वह अन्य का मारा हुआ वा स्वयं मरा मांस नहीं खाते नितान्त झूठा है आप जाकर जयपुर रामपुर आदि में जहां शेर भेड़िये आदि जीवित कोठरी में बन्द हैं अथवा सरकसों में ही देखिये कि वह डाला हुआ मांस खाते हैं वा नहीं ऐसाही धोखा और छल से कामलेकर इतना अधिक मांस का प्रचार कर दिया है देखो तो परमेश्वर ने उनमें कितनी भय भीतता उत्पन्न करदी है कि वह स्वय मनुष्यादि से घबड़ाते हैं और रात्रि को जब मनुष्य सोते हैं तब अपना शिकार खोजते हैं आंखें भी उन्हें परमेश्वर ने ऐसी दीहैं कि जिससे रात में उन्हें अधिक दीखता है मैं ता० ३ नवम्बर स० १९१२ ई० को जाफ़र पुर पोस्टगढ़ी अब्दुल्ला खां में गया था वह बतलाते थे कि दो साल की बात है कि यहां एक शेरनी और शेर के बच्चे आगये तीन चार सौ तमाशाई इकट्ठे होगयेथे वह किसी से नहीं बोले पर जिनजिन आदमियों ने उनके

गिडकरी या लकड़ी मारी उन्हीं उन्हीं को वह उस भीड़ में से खींच लेगये. ऐसे पांच आदमियों को पकड़ कर भूमि पर पटक दिया था परन्तु वे सब जान से बच गये थे।

९—हम कैसे मानें जब कि यज्ञ में पशु बध आज पर्यन्त प्रचलित है और वेदों के अनेक मंत्रों में पशु-वध का विधान है गोमेध आदि यज्ञ का बहुत पुरानी पुस्तकों में वर्णन आता है और यज्ञ में पशुओंके मारने का स्पष्ट विधान मिलता है जैसा कि "यज्ञार्थं पशुमालभेत" इत्यादि।

उत्तर आप मानें व न मानें यह आपके अधीन है हां उचित योग्यतानुसार उत्तर देकर समझा देना ही कर्तव्य कर्म हो सकता है जिसे हट और वात का पक्ष होता है उसे तो ब्रह्मा भी नहीं समझा सकते लीजिये यज्ञ में हिंसा का निषेध है जैसा ऋग्वेद में लिखा है।

अग्नेयम यज्ञ मधुरम विश्वता।
परभूर्ष सयद्देवेषु गच्छति॥

अर्थात् हे अग्नि नाम परमात्मन् तेरा यज्ञ जो हिंसा से रहित है वही यज्ञ इस स्थान मे देवताओं को पहुंचाता है रहा। रिवाज यह लगाई और निता-न्त का भ'गी नहीं हो सकता आप के देखते देखते अंगरेज़ी पोशाक कितनी प्रचलित हो गई ने कटाई कालरकी मत भागया लगी रिष्टवाच और न्याय नेकटाई है कैसी? ग्रान कालर ने दिखलाई है तमाकू तीन सौ वर्ष के भीतर २ कितनी प्रचलित हो गई, तो क्या उनका सेवन ही न सदा वे कह सकते हैं अथवा यह कि उसका पीना आवश्यकीय माना जा सकता है आज दिन छल कपट झूंठ का अधिक चर्चा है तो क्या छनी कपटी और झूठा होना चाहिये वेद के एक मंत्र में भी पशुवध का विधान न मिलेगा हां वामियों वा विरोधियों के अर्थ किये हुए जो निरुक्त निघण्टु आदि के विरुद्ध होंगे चाहे जो कुछ लिखा हुआ मिल जावे जो दिखलाने पर सम-झाया जा सकेगा कि वास्तविक अर्थ क्या है हां गोमेध आदि का पुरानी पुस्तकों में अवश्य वर्णन है परन्तु उसके अर्थ गो मारना नहीं है एक शब्द के

अनेक अर्थ होते हैं परन्तु प्रकरणानुसार लिये जाते हैं पशु शब्द का अर्थ सतपथ में अन्न और निरुक्त में अग्नि का आया है जैसा कि "पशु वै अन्न" "पशु वै ऽग्नि" गोमेध का अर्थ अनाज-इन्द्रिय कृत भोग को शुद्ध रखना अश्वमेध का अर्थ राजा का न्याय से प्रजा का पालन करना और विद्या आदि का देनेवाले यजमान का अग्नि में घृत से होम करना और नरमेध का अर्थ मृतक शरीर को उचित रीत से जलाना अन्तेष्टि संस्कार करना वा अपनी इन्द्रियों को वस में कर इन्द्रीजीत बनना वा धर्म के प्रचार में अपने को गला देना और समझना कि जो गलता है वही फलपाता है और प्रजा के अर्थ प्रकृति कर्मा (?) के भी है प्रकृति से चित्त हटाना वा रोग नाशक पदार्थों से हवन करना और जो बतलाया कि यज्ञार्थं पशुमालभेत इससे यह अर्थ क्योंनिकालते हो कि पशु लाकर बध करे क्या लाना और मारना और काम के लिये नहीं होसकता यज्ञ में घी दूध की आवश्यकता होती है और सामान संगाने आदि की बहुत सी आवश्यकतायें हो सकती हैं मैं पूछता हूं कि किसी के

खेत में कोई बैल व घोड़ा पड़ा है खेतवाला कहता है कि उसे मारदो तो क्या यह समझो कि उसे जान से या यह कि खेत से निकाल दो ऐसीही बहुत से न समझने के दोष हैं यज्ञ विधान पर यदि आप दृष्टि देंगे और विचारेंगे तो आपको ज्ञात होजावेगा कि यज्ञमें हिंसा का कितना अधिक बचाव किया है आपने देखा होगा कि जहां हवन कुंड बनाया जाता है वह पैकड़ी-नुमा ज़ीनेदार होता है उसके और पास अदितेऽनुमन्य-स्य के अर्थ पानी का खावा खोदा जाता है जिस से यह अभिप्राय है कि कोई रेंगने वाला कीड़ा पानी भरे होने के कारण न जा सके उसके पश्चात् रोली जैसी विषैली वस्तु की लकीरें की जाती हैं इसलिये कि उसकी सुगन्धि और जल और जलती आग्न के भय से जीव हवन की ओर न जा सकें फिर आटे का चौक चारों ओर पूरा जाता है इस हेतु से कि कृमी चींटी आदि आवे तो आटा लेकर लौट जावें और यज्ञ के ऊपर कपड़ा तान दिया जाता है कि उड़नेवाले जीव भी ऊपर से न गिर सकें फिर भी यदि आपका यह विचार हो तो इसका क्या उत्तर हो सकता है—देखो यदि मांस

हवन की सामिग्री होती तो विश्वामित्र रामचन्द्र को यज्ञ की रक्षा के अर्थ क्यों बुलाये और साथ ले जाकर उसकी रक्षा कराते आज यदि कोई यज्ञ करता हो और कोई अन्न घृत आदि पदार्थ लाकर कहे कि इसे भी हवन कर दीजिये तो कितनी प्रसन्नता से लेकर हवन कर देता है और उसका धन्यवाद देता है यदि यही हाल उस समय होता तो रामचन्द्र के जाने की आवश्यकता न होती यहां तो राक्षस मांस डाल कर उसे भ्रष्ट करना चाहते। इस लिये रामचन्द्र ने उन्हें रोक दिया था यह भी विदित हो कि विश्वामित्र स्वयं क्षत्री थे परन्तु यज्ञ करते समय क्रोध तक करना वर्जित है इस कारण राम लक्षमण को यज्ञ की रक्षार्थ बुला ले गये थे देखो महाभारत में कितना स्पष्ट लिखा है।

सुरामत्स्यापशुमांसं द्विजातीनां बलस्तथा।
धूर्तैः प्रवर्तितं मन्ये तद्वेदेषु कल्पितम् ॥

अर्थ—मदिरा पीना मछली मांस खाना और पशुओं का बलिदान करना धूर्तों ने वेदों में मान कर कल्पित किया है, देखो ऋग्वेद म० ४ अनु० ७ में बतलाया है कि

जो (यातुधाना) मांस भक्षक (पौरुषेन) क्रविष पुरुष का मांस (अश्वयेन पशुना) घोड़ा आदि पशु के मांस को खाता है और जो बछड़े को न देकर गौ का दूध हर लेता है उसके सिरों को हे (अगने)परमात्मन- अपने तेज से (विवृश्च) काटिये अर्थात् घोड़े गाय के मारने और पुरुष के मारने का तुल्य दण्ड नियत किया है जैसा कि

ओ३म् यः पौरुषयेन क्रविषा समङ्क्ते यो अश्वेन पशुना यातुधानः। यो अघ्न्याया भरति क्षीरमग्ने तेषाम् शीर्षाणि हरसा विवृश्च ॥

और सुश्रुत में बतलाया है अज संसान के बीज का नाम है छाग: अयं छाग: छाग के अर्थ बकरा ही नहीं बकरी के भी हैं छागलादि घृत का वर्णन वैदिक में आया है।

अज संसानि बीजानी छागंनहन्तु मोहिंत।
अग्न्ये छागस्य नमायमेदसो अनुब्रूहि ॥

इसमें छाग के दूध मलाई खोवा आदि का वर्णन है और मांस के अर्थ गूदे के बहुधा आये हैं जैसा कि सुश्रुत में लिखा है

कपित्था दुद्धरेन्मांसेन अजेनमूत्रेण पूर्येत।

कैथा के गूदे को बकरी के मूत्र से भिगोवे ॥

१०—जब जीव जैसा चींटी कीड़ों में है वैसा ही बकरी गाय में और इसको शरीर से अलग करने में पाप होता है तो नित्य मनुष्य पानी पीता है और उसमें अनगिन्त जीव मरजाते हैं आज कलके साइंस दाताओं ने जिनसे योग आप कदापि नहीं हैं सिद्ध कर दिया है कि पानी कीड़ा योग काही नाम है जब खुर्द बीन (लघुदर्शक) यन्त्र से देखते हैं तो वह कीड़े रेंगते ज्ञात होते हैं तो पानी पीना भी पापही हुआ।

उत्तर—कौन कहता है कि मैं उनके योग्य हूं संसार में कोई न कोई गुण किसी न किसी में न्यूनाधिक रहता है आप सोचिये कि यदि पानी कीड़ोंका समूहही है तो आप एक मन पानीको खूब औटाइये जब सेर भर रह जावे फिर उसे खुर्दबीन से देखिये कि अब वह कीड़े रेंगते ज्ञात होते हैं वा नहीं यदि नहीं होते तो

समझ लीजिये कि आप का कथन सत्य है प्रथम चलते थे अब इतनी अधिक उष्णता पहुंचने से मरगये यदि फिर वैसेही रेंगते दिखाई दें तो समझ लो कि वह कीड़े नहीं हैं वरन् उस आंख और खुर्दबीन का दोष है वह वास्तविक पानीके मिले हुए परिमाणु हैं जिनसे पानी बना है यदि किसी वैदिक फ़िलासफ़र से पता लगाते तो वह बता देता कि साठ परिमाणु का एक अणु होता है और दो अणु का एक दुनैक ऐसे चार दुनैक का पानी बनता है रहा यह कि पानी में कभी कभी विना खुर्दबीनके भी कीड़े दिखाई पड़ते हैं क्या वे भी कीड़े नही हैं वह अवश्य कीड़े हैं परन्तु शास्त्रमें "वस्त्र-पूतं जलं पिवेत" कपड़े से छान कर पानी पीना लिखा है जब छान लीजियेगा तब कीड़े नहीं पीजियेगा इसके अतिरिक्त यदि बहुत सूक्ष्म कीड़े खान पानके द्वारा पेटमें पहुंच जाते हैं तो वे मरते नहीं जिनको वे तत्ववेत्ता भी ऐसाही मानते हैं वे कीड़े रक्त में स्थित रहते हैं वा छिद्रों से निकल जाते हैं जैसे गेहूं में रहने वाले घुन चक्की में पिसने पर भी जीवित रहकर आटे में दिखाई पड़ते हैं और वह तो घुन से भी सूक्ष्म बताये जाते हैं इस कारण हिंसा नहीं होती ॥

११–इससे तो अच्छा टाला अब आप यह बतलाइये कि आप दूध भी पीते हैं वा नहीं? यदि आप दूध पीते हैं तो मांसाहारी अवश्य हुए क्योंकि दूध तो रक्त और मांस से बनता है और दूध में मांस का भाग सम्मिलित रहता है–

उत्तर–आपने यह आक्षेप बिना जाने कर दिया है गाय, भैंस, बकरी, आदि का शरीर एक कोल्हू जैसी कल के सदृश है कोल्हू में जैसी वस्तु का घान डालियेगा वैसीही वस्तु का रस उससे उत्पन्न कीजियेगा। देखिये उसी से मीठा गन्ना पेरने से मीठा और स्वादिष्ट रस निकलता है उसी से कड़ुआ, मीठा तेल उसीसे सुगन्धित फुलेल। यह कोई नहीं कहता कि कोल्हू काठ वा लोहे का है इस लिये रस और तेल भी काठ और लोहे का क्यों नहीं? इसी प्रकार इस शरीररूपी कोल्हू में जैसी गिज़ा का घान पड़ेगा उसी के गुणों को लिए हुए माता का दूध बनेगा आपने देखा होगा कि जिस दिन माता कोई बदपरहेज़ी कर लेती है बच्चे पर जो दूध पीता है तुर्त प्रभाव पड़जाता है उस दूध के पीनेसे वही प्रभाव पड़ेगा जैसा कुछ संक्षेप से दूसरे उत्तर में बताया

गया है हमें यह हर्ष है कि हम गाय, भैंस, बकरी, इत्यादि घासपात, पात अन्न खाने वालों शाकाहारी ही पशुओं का दूध पीते हैं किसी शेरनी भिहरणी मांसहारी का नहीं यह भी निश्चय है कि जो मातायें शाकाहारी हैं उनके दूध पीने से सात्विकी स्वभाव उत्पन्न होगा और मांसाहारी माताओं से तामसी यह बड़ी भूल है कि दूध मांस से बनता है दूध मांस से नहीं बनता है रससे बनता है सब वैदिक—ग्रन्थों में इसका स्पष्ट वर्णन है देखो भावप्रकाश पूर्वखंड तीसरा प्रकरण स्तन निरूपण में कहा है—

रसप्रसादो मधुरः पक्वाहार निमित्तजः ।
कृत्स्नोद्देहात्स्तनौ प्राप्तः स्तन्यमित्यभिधीयते

अर्थ—रसका जो सार मधुर भाग है पके हुए अहार से बना हुआ सम्पूर्ण देहसे स्तनों में प्राप्त हुआ दूध ऐसा हो जाता है जो लोग दूध को रक्त से उत्पन्न हुआ बताते हैं तब तो दूध रक्त से भी सूक्ष्म हुआ अब जितना नित्यप्रति गाय, भैंस, बकरी आदि का दूध निकाल लिया जाता है उतनाही यदि एक दिन भी रक्त निकाल लिया जावे तो उनकी क्या दशा होजावे या जीवन दुस्तर न होजावे यदि मांस से ही दूध बनता तो पुरुषों के शरीर में भी दूध उत्पन्न होजाया करता स्त्री के लिए कोई विशेषता न होती इससे स्पष्ट सिद्ध है कि

स्त्रियां ही दूध की कलें हैं पुरुष नहीं, और मांस तो रक्त के पश्चात बनता है—

रसाद्रक्तं ततो मांसं मांसं मेधा प्रजायते ।
सोऽस्थ ततो मज्जा मज्जा शुक्रस्य सम्भवः ॥

१२—मांसाहारी वीर और अधिक लम्बे चौड़े शरीर वाले होते हैं और इस वीरतादिकी सबही वांछा करते हैं इस कारण मांस अवश्य खाना चाहिये—

उत्तर—यह भी इतिहास न देखने और स्वयं परीक्षा न करने की बात है यदि पूर्णतया भिज्ञ होते तो ऐसी बात न कहते मांस खाना वीरता नहीं सिखाता वरन् कायरता सिखाता है स्वभाविक नियम को छोड़ कर कोई कहां जा सकता है मैं बतला चुका हूं कि सारे मांसाहारी जीव रात्रि को छुपकर शिकार खोजते हैं शेर इतना बल रखता हुआ मनुष्य की शकल से भागता है बिल्ली को देखिए कैसे दबे पांव रखती और घात में बैठी रहती है जैसी इन जीवों की दशा है वैसीही पुरुषों की अनुमित हो सकती है प्रायः ऐसाही दूर से धोखे से छल से काम निकाला जाता है दूरसे ही निशाना बनाया जाता है सामने होकर दो पर दो लड़तेही नहीं राजों पर आंच नहीं आती सैना और प्रजा कटती और मरती है धर्मयुद्ध होताही

नहीं रहा डील डौल का लम्बा चौड़ा और बल का अधिक होना सो भी आप देख लीजिये कि शेर चीतेसे गैंडा और अर्ना भैंसा पुष्ट और बलिष्ट होता है गैंडा पेड़ों को चीरता फाड़ता निकल जाता है शेर उनके भय से झाड़ियों में छिपते हैं अर्ने भैंसे बाघों को सींगों पर रखकर फेंक देते हैं रहे मनुष्य सो पुरानी बातों को तो आप कहानी समझेंगे नहीं तो अर्जुन, कृष्ण, राम, भीम, भीष्म की वीरता तो सूर्यवत प्रकाशित है जो शाकाहारी ही थे वर्तमान में राममूर्ती को सब ने ही देखा है इङ्गलैण्ड निवासियों की अपेक्षा स्काटलैंडवाले न्यूनमांस भक्षी हैं वे उनसे डील डौल और बल में अधिक हैं और इन दोनों की अपेक्षा आइरलैंड वाले-अधिक निरामिशाहारी हैं वे दोनों से बल और शारीरिक दशा में बढ़े हुए हैं लापलैंड से फिलेपानियां वाले जो एक जैसे जल वायु में रहते हैं केवल मांस कम खाने के कारण हृष्ट पुष्ट हैं आपके यहां के मथुरा के चौबे जो मांस नहीं खाते कैसे हृष्ट पुष्ट हैं विलायत निवासी मांस खाने की हानि लाभको जान कर बराबर विजिटेरियन बनते चले जाते हैं सन् १८९८ ई० में २५

होटल ऐसे थे जिनमें मांस नहीं पकता था और ३२ सहस्र पुरुष नहीं खाते थे अब तो होटलों की संख्या बहुत बढ़गई हैं और यह दशा होरही है कि एक पङ्क्ति खारही है एक खड़ी है हर समय भीड़ लगी रहती है अंग्रेज़ नित्य नये तजुर्बे अनुभव करते जाते है अमेरिका के डाक्टरों ने तजुर्बा किया है कि मांसाहारी का दिल जितने समय में ७२ बार धड़कता है न खानेवाले का दिल ४२ बार बस आप इसी से प्रतिफल निकाल लीजिये—

१३—मांस खानेवाली जितनी कौमें हैं वे आपुस सहानुभूति से हमदरदी अधिक रखतीहैं इसलिये मांस अवश्य खाना चाहिये ।

उत्तर—आपने बिलकुल उलटी बात कह दी । दया करुणा का नाम न लीजिये जरा सुई अपने शरीर में चुभा कर देखिये तो सही कितना कष्ट होता है जब उन्हें अन्य जीवों के गले पर छुरी फेरने मेंकिसी प्रकार संकोच गिलानी नहीं है वरन् वध होते हुए जीवों की बिलबिलाहट और चिल्लाहट का तमाशा देख प्रसन्न होते हैं इधर बन्दूक भरी और मारदी । इधर छुरी निकाली और गले पर फेरदी ।

तो सहानुभूति हमदर्दी कैसी ? वे निरपराधी तड़पते बिलबिलाते चिल्लाते मिमियाते डकराते हैं जब इनका दिल उनकी दशा पर नहीं पिघलता और नर्म नहीं होता तो कहने की बात है कि वे हमदर्द अधिक होते हैं हा शोक !

कभी वे दर्द ताऊ से गुलिस्तान जिबह करवाके ।
बला से तेरी गर इकबेजुआं की जान पे बन आई ॥
तेरी तफ़रीह तबियत को अजब अच्छा तमाशा है ।
वह तड़पे है तेरे लब पै उह्हू अहाहा है ॥

आज वह ही भारतवर्ष है कि जिसके गली कूचे में सहस्रों मन मांस पकाया जाता है और चिराइन्द फैलाई जारही है जहां अहिंसा ही परम धर्म था एक वह समय था जब अत्रिऋषि देशोंका पर्य्यटन करते हैं और अन्य देशों में भी निरामिषहार पाते हैं वे पर्य्यटन का ब्योरा निम्न श्लोक द्वारा बताते हैं ।

वाल्हिका पल्वाशचीनाश्चुलीकायवना-
शिका । मांस गोधूम्र महिदशास्त्र विश्वा-
नरोच्यते ॥

अर्थात् मैंने बलख, अरब, यूनान, ईरान, चीन, रूम,

आदि का पर्य्यटन किया वहां मैंने चर्द, गेंहू, अंगूर, के खाने वाले और हवन यज्ञ के करने वाले मनुष्य पाये हा आज समय आगया है कि मांस जिसका मूल कारण रजवीर्य्य जैसा मलीन पदार्थ है उसके सेवन करने वाले स्त्री पुरुष बन गये वह मन जो तमोगुणी भोजनों के प्रभाव से प्रभावित हुआ है कैसे हमदर्द हो सकता है जिस मनके निकट आमाशयमें मांस कि टुकड़े पड़े हैं और हड्डियों का रस भरा है वहां सहानुभुति रह नहीं सकती आपको प्राचीन आर्यों के इतिहास में एक भी ऐसी मिसाल राजाओं में नहीं मिलैगी कि जिसने राज के कारण कभी चचा भाइयों का वध किया हो पिता को क़ैद किया हो अपने उचित भागसे चाहा अधिक हो वह उचित अनुचितको समझते थे स्वप्न में भी बड़े भाई का छल वा बल से हक़ मारने का विचार भी उत्पन्न न होता था भरत जी को उनकी माता और वशिष्ट आदि समझाते हैं कि आप राज तिलक लेकर गद्दी पर बैठिये गद्दी खाली है वह कहते हैं नहीं मुझे इसका अधिकार परमेश्वरने नहीं दिया तो मैं कैसे ले सकता हूं उनसे कहा जाता है कि परमेश्वर का ही दिया

उनको परमेश्वर न देता तो माता कैसे मांगती पिता और श्री रामचन्द्र कैसे दे डालते वह कहते हैं इन सब के देने से मैं कैसे ले सकता हूं यदि परमेश्वर देता तो मुझे बड़ा भाई बनाता दूसरी ओर जिन्हें आप हम-दर्द बताते हैं देखिये तो सही कि उनका सगे पिता और भ्राता लाक के साथ कैसा घृणित वर्ताव रहा है फिर अन्यों के साथ सहानुभूति कैसी तनिक देर में वर्षों के उपकारों को भूल जाते हैं स्त्री पुरुषों भाई बहिनों के अभियोग भी इन्हीं मांसाहारियों में अधिक पाये जाते हैं व्यभिचार गर्भपात भी इन्हीं में अधिक प्रचलित है इत्यादि बातों से पता लगाइये कि इन में सहानुभूति कितनी है पशुओं में देखिये कि मांसाहारी कुत्ता आदि जीवधारी कभी खेड़ के खेड़ गल्ले बनाकर स्वयं नहीं निकलते हैं यदि मांस खाने से मेल बढ़ता तो अवश्य गोल बांधकर निकला करते परन्तु दूसरी ओर गाय बैल घोड़े भेड़ बकरी समूह बना कर साथ २ फिरते हैं कुत्ते आदि अलग २ ग्रास डालने पर भी एक दूसरे पर झपटते और घुरोते हैं। वैसे बकरी आदि नहीं, वह एक साथ खाते रहते हैं मनुष्यों में भी

आपसके झगड़ों को यदि खोजते रहिये तो सांसारियों में अधिक मिलेंगे इतिहास देखो तो पता लगे कि किन पुरुषों ने सगे चचा को गद्दी के लोभ से वध किया किसने विधवाओं और मासूम बच्चों को ऐसे कष्ट प्रदान किया मनुष्यों की स्वतन्त्रता छीनी लौंडी गुलाम बनाना प्रजा का शिकार कराया ऐसे भयानक दृश्य हैं जो वर्णन योग्य नहीं मेरे शरीरके सारे रूंघटे खड़े हो जाते हैं जब मैं शाहजहां बादशाह का वृतान्त पढ़ता हूं मुहीउद्दीन औरङ्गज़ेब आलमगीर ने अपने सगे बड़े भाई दाराशिकोहका अधिकार छीन उसको और दो अन्य भाई शुजाद, मुराद को वधकर के और अपने बाप शाहजहांन् को कैद करके सिंहासन पर बैठा बाप को आगरे केकिले में कैद किया वह जगह मैंने जाकर देखी है वैसे ही बहुत तंग थी और उस पर जुमे की नमाज़ के अर्थ वहां मसजिद बनवादेने से और भी संकुचित हो गई उनको नपा हुआ पानी और तुला हुआ नाज मिलता था एक दिन शाहजहां का पानी खिस्री गिरा गई कहला भेजा कि थोड़ा पानी और दिलवा दीजिये हुक्म हुआ

कि नियत प्रमाण से अधिक पानी नहीं मिल सकता हा! सगे निरपराधी पिता के साथ ऐसा कठिन वर्ताव हो उन पर इतनी सहानुभूति न हो कि थोड़ा सा पानी और दिलवादें और यह भी न सोचें कि यदि हमारी संतान हमारे साथ यही वर्ताव करे तो कितना शोक और क्लेश हो शाहजहां के जो मन की व्याकुलता थी वह इन दो पदों से प्रकट है मेरी आंखों में पानी आजाता है जब उसकी दशा का इन पदों से पता लगाता हूं।

अय पिसर तू अजब मुसलमानी, जिन्दगांरा व आब तर सानी। आफ़रीं बाद हिन्दुआं हरबाब, मुर्दगां मीदहिन्द दायम आब॥

अर्थात् अय तू अनोखा सुपूत मुसलमान है जो जीते बाप को पानी से तरसाता है इससे तो उन हिन्दुओं को ही धन्यवाद है जो मरे बाप दादे को पानी देते हैं इससे यह परिणाम निकला कि केवल मांस खाना सहानुभूति का कारण नहीं हो सकता दया धर्म की परीक्षा अधिक यदि आप करना चाहें तो आप किसी निरामिषहारी से कहिये कि अमुक

बकरा मुर्गा आदि को शिवह कर दीजिये वह कदापि स्वीकार न करेगा परन्तु मांसाहारी से कहने की देर होगी कि झट बिस्मिल्ला कहकर छुरी फेर देगा अमेरिका के डाक्टरों ने परीक्षार्थ बकरी को कुछ दिनों मांस खिलाया उनका सुभाव खुलासे अधिक शरीर हो गया।

१४—मांस खाने में मछली का खाना सम्मिलित है वा नहीं यदि मछली न खाई जावे तो उसका क्या हो यह तो खाने के अर्थ ही बनी हुई ज्ञात होती है

उत्तर—आपकी समझ में यही आया परन्तु परमेश्वर ने इस लिये नहीं बनाई। और निरर्थक भी नहीं बनाई आपने देखा होगा कि नगर के कुओं में एक दो मछली ताल वा नदी से लाकर डाल देते हैं इस कारण कि कुऐं का जल शुद्ध रहे उसकुऐ की गन्दगी को मछली खाकर जलको शुद्ध रक्खे। जो कि कुऐ की अपेक्षा नदी में जल अधिक होता है और कुआं मनुष्य बनाता है इस कारण नदी से मछली लानी पड़ी परन्तु परमेश्वर ने नदियों में आप और हमारे और

अन्य पशुओं के रक्षार्थ मछलियां बहुतायत से उत्पन्न की हैं वह मलिनता को खाती और जलको शुद्ध बनाती रहती हैं जो कुछ थूक खकार रेंट पीब मुर्दा मुर्दा नदी में पड़ता है वह उसे खाकर अपना पालन करती हैं यदि मछली न होतीं तो दरयाओं का जल बिलकुल भ्रष्ट होता और बहुत हानि पहुंचाता सच पूछो. तो परमेश्वर ने जल की शुद्धी के अर्थ कुदरती भंगी उत्पन्न कर दिये थे परन्तु आप तो उन्हें भी खाने लगे आप को कलक्टर और म्यूनीसिपेलिटी और मुख्या मुक़द्दम के नियत किये हुये सफाई करने वाले भंगियों की रक्षा का ख्याल है यदि उन्हें वध करो तो फांसी पाओ परन्तु परमेश्वर जो हाकिमों का भी हाकिम है उस के नियत किये हुये वास्तविक भंगियों के मारने खाने में कुछ भी भय नहीं किया जैसी मछलियां जल की भंगिन हैं वैसे ही मुर्गी (कुक्कट) सुअर आदि थलके भंगी हैं वे भी मैला खाकर स्थान शुद्ध करते रहते थे आज मनुष्य उन्हें भी खा गये यह भी न सोचा कि शरीर से पसीना निलकता है पसीने से कपड़ा मैला होजाता है दुर्गन्धि आने लगती है उसको निकालकर

फेक देते हैं तो क्या इस शरीर से निकले हुए मैले के खानेवाले पशु पक्षियों को हम आप सर्वोत्तम होकर खा जावें॥

१५—मनुष्य का निश्चित अहार मांस है अथवा अन्न फल शाकपात है इसका निर्णय होना ही कठिन है इस कारण जो चाहे वह मांस खावे जो चाहे शाकादि—

उत्तर—यदि आप निर्णय करना चाहें तब तो सुग मता से हो सकता है। परन्तु नमानने वालों की दवा तो लुकमान हकीम के पास भी न थी। देखो जिस दिन से बालक कुछ खाना आरम्भ करता है तो पहिले पहिल बालक को तस्मै आदि हलका भोजन खिलाया जाता है वा मांस खिलाया जाता है वही स्वभाविक अहार है जो आरंभ से मिले जिसके बिना जीवन कठिन हो हिन्दुओं आर्यों में तो उस संस्कार का नाम ही अन्नप्राशन है। यदि मांस बालक का आहार होता तो उसका नाम मांस-प्राशन होता इसके अतिरिक्त बालक के सामने आप फूल फल और मांस का टुकड़ा रखिये बालक जिसे मांस और फूल फल ज्ञान नहीं है फूल और फल की ओर

हाथ बढ़ायेगा मांस की ओर कदापि नहीं और मुंह के पास ले जायेगा तो फल खायेगा मांस नहीं वरन् सूंघने से घृणा करेगा अधिक परीक्षा करना हो तो देखिये कि जहां गाना होता है वा चिड़ियां बोलती हैं बालक सुन कर नहीं रोता वरन् प्रसन्न होता है परन्तु पशु के वध के समय की करुणा भरी वाणी सुनकर तुर्त ही चीख पड़ता है बालक का नम्र मन उसके दुःख और क्लेश से प्रभावित होता है उसको सहिन नहीं कर सकता सोचने से और भी बहुत उदाहरण मिल सकते हैं।

१६—शिकार आखेट खेलना राजाओं का धर्म है देखो रामचन्द्र ने हरिण का शिकार खेला था इस लिये शिकार से प्राप्त किया हुआ मांस क्यों न खाया जावे।

उत्तर—प्रथम तो राजे आपकी भांति तीतर बटेर मुर्गाबी वा मछली का शिकार नहीं खेलते थे न कहीं उनका शिकार धर्म युक्त है, हां शेर भेड़िये का खेलते थे जब उन्हें ज्ञात होता था कि अमुक आरण्य में गौओं को व्याघ्र से दुःख है वा अमुक स्थान में भेड़िये (वृकः) लागू होगया है तब जिस प्रकार न्यायाधीश दुष्ट डाकुओं को दण्ड देकर प्रजा पर दया करता

है और पाप भागी नहीं होता. इसी प्रकार उन दुःख-दाई जीवों को मारकर पथिकों और निर्बल पशुओं पर दया करना राजा का कर्तव्य होता था परन्तु उनका मांस न तब कोई खाता था न अब तक कोई खाता है। महाराज रामचन्द्र पर मिथ्याही दोषारोपण करना है उन्होंने तो हरिण की खाल ओढ़े हुए राक्षस को देखकर कह दिया था कि यह हरिण नहीं है वरन कोई कपटी छली मायावी पुरुष है जब सीताजी के हट से रामचन्द्र उसके पीछे गये और तीर मारा तो वह वास्त-विक दशा में परिवर्तित होगया तो फिर बताइये कि उसने किसका मांस खाया था ?

१७—यह कैसे सिद्ध है कि मांस खाने से घी दूध कम हो गया ?

उत्तर—थोड़े समय पहिले जितनी पशुओं की अधिकता थी वह अब नहीं रही और नित्य प्रति न्यून होती जाती है पशुओं का मूल्य बढ़ता जाता है यही प्रत्यक्ष प्रमाण है प्राचीन समय में तो पशुओं की गणना करना कठिन था वृद्धों के मुखाग्र ज्ञात होता है कि जब इतना वध न था तो पांच सेर तक रुपये का

घृत बिकता था और आईने तारीखनुमामें जब मैं मदरसे में पढ़ता था तो मैंने पढ़ा था कि अलाउद्दीन खिलजी के समय में रुपये का तीस सेर तक घी बिकता था और अकबर बादशाह के समय में रुपये का बीस सेर बिकता था जब अंगरेज बहादुर यहां आये थे तब भी पांच सेर के लगभग बिकता था। आज मवेशियों का मूल्य बढ़ता जाता है और घी खालिस तीन पाव और दूध निर्जल आठ सेर नहीं मिलता जो घी मिलता है उसमें बहुधा गाय सुअर की चरबी मिली हुई होती है जिससे हिन्दू और मुसलमान वही अपने धर्म से पतित हो रहे हैं जो सब मांस भक्षण और पशुवध का फल है। पहिले यदि २५) का किसी गांव में बैल आता था तब सब ग्रामीण पुरुष अचंभा समझ कर के देखने जाते थे कि २५) का बैल कैसा होगा. आज दो सौ रुपया का भी बैल साधारण समझा जाता है और कोई आश्चर्य से देखने नहीं जाता—

१८—बात वह माननी चाहिये जिसकी ओर अधिक सम्मति हो इस हेतु से कि संसार के प्रत्येक भाग

में मांसाहारियों की संख्या अधिक है मांस खाना सिद्ध होता है।

उत्तर–यदि कोई मानी हुई बात नहीं है कि जिस काम को अधिक पुरुष करते हैं वह काम भी अच्छा होता है सच पूछो तो भले और श्रेष्ठ काम करनेवाले पुरुषों की संख्या न्यून होती है और जो भी अच्छी और बहुमूल्यवस्तु होती है उसकी संख्या न्यून होती है देखो तो कुपढ़ों से पढ़े हुओं की मिडिल वालों से एन्ट्रेंस वालों की उससे "एफ़० ए०" उनसे 'बी० ए०' और सब से 'एम० ए० वालों की संख्या न्यून होती है। हीरा, लाल सब से इसी कारण बहु मूल्य है कि वह कम प्राप्त है इसलिये आज अधिक संख्या मांसाहारियों की है तो केवल इस कारण उनकी बात मानने योग्य नहीं हो सकती हां यदि आप अधिक डाक्टरों, बुद्धिमानों, हकीमों, ऋषि, मुनियों, महात्मओं की सम्मति दिखाते तो अवश्य मानने योग्य हो सकती थीं एक भी विद्वान की सम्मति लाखों मूर्खों की सम्मति के सामने सदैव मानने योग्य होगी।

१९–यदि बकरी का मांस खाया जावे और गाय

आदि का नहीं तो घी दूध बढ़ जावेगा इस लिये केवल गाय भैंस के मारने और उसके मांस खाने का निषेध करना चाहिये बकरी से इतनी हानि नहीं हो सकती।

उत्तर—यह मान सकते हैं कि उतनी हानि नहीं होती परन्तु कुछ हानि होना तो आप को भी स्वीकार है धीरे धीरे इस थोड़े का भी प्रभाव बहुत दूर तक पहुंच जाता है इसी विचार को सन्मुख रखकर हिन्दुओं में वाममार्गियों के अतिरिक्त प्रत्येक मतवाला इसका सेवन बुरा समझता है और यदि उनकी समष्टि दशा ली जावे तो सब की मानी हुई पुस्तक पवित्र वेदों में इसका निषेध है। हां जैसा गो सूक्त वेदों में आया है वैसे बकरा सूक्त नहीं आया पर मनाई बकरा खाने की भी है जब निषेध होते हुये खाने लगे तो उसका अन्तिम परिणाम यह हुआ कि वह मांस महिंगा होने लगा और यहां तक हुआ कि मेरी याद में डेढ़ आने सेर विकता था आज चार आने सेर है निरधन मुसलमानों को जिनको मांस का चसका पड़ रहा है सस्ते मांस की आवश्यकता पड़ी वह भी उनको इन्हीं हिन्दुओं की योग्यता और बुद्धिमानी से अधिकता से प्राप्त होने लगा बहुधा

स्थानों पर हिन्दुओं ने नख़ासे खोल दिये जहां हिन्दू खुल्लम खुल्ला जाकर बेचने लगे और प्रायः हिन्दू वैतरणी पार होने के अर्थ बूढ़ी और निरबल गायों को पाधा पुरोहितों और महाब्राह्मणों को दान करते हैं जो दान ले कर दो चार आने रोज़ का अपने ऊपर निष्प्रयोजन भार समझ कर एक दूसरे से कसाइयों के यहां पहुंचा देते हैं जिसका प्रत्येक स्थान पर पता लगाने से लग सकता है बकरी के मांस खाने से ही यह परिणाम निकला कि गाय आदि कटने लगी नहीं तो आप जानते हैं कि कोई धनाढ्य मुसल्मान गाय का मांस नहीं खाता क्योंकि गाय का मांस अति उष्ण गञ्ज आदि अनेक रोगों का उत्पादक होता है और इस विषय में अबू दाऊद ने मरासील में स्पष्ट लिखा है कि—

"लहु मुल बक़र दाउन वसमनहा दवाउन वलुबनहा शिफ़ाउन"

अर्थात् गाय का मांस रोग और घृत औषधि और दुग्ध शिफ़ा (आरोग्यता) है इस कारण जब तक हिन्दू नितान्त मांस खाना नहीं छोड़ते तब तक गाय आदि की रक्षा नहीं हो सकती हां यह बात अवश्य है कि जितना बड़ा जानवर होगा उसको उतना

ही अधिक मरने का कष्ट होगा। यह माना नहीं जा सकता कि मच्छड़ को मरने पर उतना ही कष्ट होता हो जितना हाथी को होता है हम बकरी के मारने की आज्ञा नहीं देते वरन हमारी मनोवांछा है कि उसकी जान को रक्षा हो उससे पहाड़ों आदि पर काम लिया जावे परन्तु गाय को हम बकरी पर विशेषता अवश्य देते हैं और बुड्ढी गाय के दान करने वाले कृषानों और साहूकारों गोपालकों और उन लेने वाले पुरोहितों से जो दान ले कर नखासों और कसाइयों के यहां पहुंचाते हैं गौ की ओर से सविनय प्रार्थना करते हैं वे इस पर अवश्य ध्यान दें। वह विचारी बिलखती हुई कहती है—

न कर क़स्साव के मुझ को हवाले आह ओ दहक़ान्।
मुरव्वत भी कुछ आख़िर शर्त है ओ दुशमने ईमान॥
बुढ़ापे में नहीं कमबख़्त मेरी जान का ख्वाहान्।
नहीं है याद ओ वेदर्द क्या तुझको मेरे इहसान॥
पिलाई दूध की धारें हैं बरसों तेरी मान हूं मैं—गौ की पूरी रक्षा हो जावे यदि यह हिन्दू बेचना और दान करना छोड़ दें।

२०—ताऊन कल से चला है उसके कारणों में एक कारण मांस खाना भी घर घसीटा है जो कितनी झूठ

और गप्प है महामारी (प्लेग) से और मांस खाने से क्या सम्बन्ध है।

उत्तर—देखो शरीर में जब तक बाल और नख लगे रहते हैं तब तक नख ग्रास के साथ मुंह में चले जाते हैं कभी २ मूछों के बाल भी मुख में चले जाते हैं।

परन्तु जब वे शरीर से अलग हो जाते हैं तो अपने ही नख दांत बाल मुंह में कोई नहीं रखता इसी प्रकार जब शरीर से जीव अलग हो गया चाहे वह ईश्वर की आज्ञा से हुआ हो चाहे आपके मारने से मरा हो, दोनों दशाओं में वह शरीर अपवित्र हो जाता है इसी विचार से अपने प्यारे से प्यारे सम्बन्धी के शरीर को शीघ्र घर से पृथक करना ही सूझता है और जिस स्थान पर वह मृतक शरीर कुछ काल पड़ा रहता है उस स्थान को कई दिन तक गन्धक लोबान जलाकर वा हवन कर के शुद्ध किया जाता है तो फिर जो पशु के मृतक शरीर को खाते हैं और उनसे वायु गन्दी की जाती है और वायु के बिगड़ने से ही प्रत्येक रोग होता है और पशुओं में भी रोग होते हैं तो मांस खाना ताऊन का कारण क्यों नहीं हुआ ताऊन के और भी अनेक कारण

हैं जिनमें एक बड़ा कारण यह भी है और आठ कारण तो मैंने अपनी बनाई हुई प्रायश्चित्त विचार में हो बताये हैं जो तीसरी बार अब और कुछ अधिक हो कर छपी है।

२१–आप कुछ बतायें परन्तु मैं समझता हूं कि मांस में बलका भाग अधिक है और स्वाद भी होता है

उत्तर–बल का ख्याल ही ख्याल है शरीर को बादी बना देता है पिलपिला कर देता है जिसका पता बुढ़ापे में जाकर लगता है मांस से दाल में नेटरोजन अर्थात् पट्ठे बनाने का भाग अधिक है द्वितीय एक सेर मांस में १ छटांक और १ सेर मेवेमें ८ छटाक और अन्न में १२ छटाक और घी में १५ छटांक मत बनाने की शक्ति है जो डाक्टरों की सम्मति है रहा स्वाद सो सब मसाले और घी का है विना घृत और मसाले के खाइये कि स्वाद है वा नहीं–

२२–क्या आप हिन्दुओं के अतिरिक्त हुकुमाय इसलाम वा डाक्टरों की सम्मति भी मांसखाने के विरुद्ध दिखा सकते हैं वा किसी बड़े अंगरेज़ की सम्मति पेश कर सकते हैं कदापि नहीं–

उत्तर—अपनी शक्ति भर यत्न करूंगा यदि स्वीकार हुई तो अपनी प्रतिष्ठा समझूंगा लीजिये।

१—सब डाक्टर प्रत्येक रोग में औषधि के साथ गाय का दुग्ध बताते हैं न कि मांस।

२—मांस को लहसुन प्याज के समान यूनानी हकीमों ने बाह-उत्पादिक बताया है यही कारण है कि मांस-भक्षी ऋतुगामी कदापि नहीं रह सकता यहां तक कि जब अहिल इसलाम खनिक़ाह में जाते वा अहिल तसव्वुफ़ बनते वा हब्सदम (प्राणायाम) करते हैं तो उसे प्रथम छोड़ देते हैं वहां तक हैवानात किये बिना कोई कार्य ही नहीं चलता नकोई कृपा सिद्ध होती है—

३—मुफ़र्रदाततिब अर्थात् इल्मुल अदविया में लिखा है आशामीदन आबबाद अज़गोश्त मुज़िर व तुनाबुल आवदरशबहा बाइस तुख़मह बजमांआं बाशीर व बैज़ा मुज़िर वग़ैर मुजबविज़ बरोज़े दोबार खुर्दन आंम मसनूअ जिहत आंकि अलबत्ता हज़मआं बरत ब्यत दुशवार बबाइस फ़िसाद अख़लात व ज़ोफ़ कुव्वत अस्त

४—साहिब मख़ज़न-उल-अदवियाने गोश्त को तारीफ़ में लिखा है मुदाविमत बरआं नीज़बाइस

फ़िसाद अख़लात व कसावत क़ल्ब वतीर्गी बासरा व बिलादत ज़िहन व ग़लबा सिफ़ात बहीमी व अख़्लात सबई ।

अर्थात् रात्रि में मांस खाने से तुखमा जो हैज़े से कुछ न्यून होता है होजाता है और ख़िलतें जो वात पित्त कफ़ कहाती हैं उनमें दोष आजाता है मनकाला अर्थात् मैला होजाता है, आंखों धुंधलापन पैदा हो जाता है, जिहन कुंद होजाता है इत्यादि दोष उत्पन्न होजाते हैं—

५—अबुल फ़ज़ल तीसरे दफ़्तर में लिखा है दर-ज़िक्र बादशाह अकबर मेफ़रमूदन्द कि बेचारह आदमी बावजूद ख़िरद दरजुलसत तबीअत दर उफ़तादह राह निजात ख़ुदनीमी जोयद । बावजूद चन्दी नेमत किवराय फ़सरंजाम दादह अन्द क़स्द जानवरान नमूदह सीनेय ख़ुदरा किमहरम असरार एज़दी अस्त गोरिस्तान हैवान मेसाज़द वाय वरायपुर साख़तन शिकमे चन्दी जानदा-रा बख़ाने अदम फ़िरस्तादह मीकर मूदन्द कि काश के जिस्म उंसरीमन बमसाबये कलां बूदे कि हैं ना

मुआमले फ़हिनाल गोश्त ख़ुदरा अज़ गोश्त ख़ुद कस बेरगश्तरह वजांदार दीगर न परदाखतन्दे—

अर्थात् अज्ञानी पुरुष अपने मनकी मूढ़ता में ग्रसित हुआ ? अपने छुटकारे का मार्ग नहीं ढूंढ़ता ईश्वर सब के सृजनहार ने उसके अर्थ अगिन्त प्रकार के नाना पदार्थ उत्पन्न कर दान दे रक्खे हैं उनपर संतुष्ट न रहता हुआ उसने अपने अन्तः करण को जो ईश्वरीय भेदों के जानने का साधन है उसे पशुओं का क़बरस्तान बनाया है और अपने पेट भरने के अर्थ कितनेही जीवों को परलोक पहुंचाया है बड़े अफ़-सोस से बतलाते हैं कि यदि ईश्वर मेरा शरीर इतना बड़ा बनाता कि यह मांस भक्षण के हानि लाभ को न समझने वाले सारे के सारे मेरे ही मांस को खाकर तृप्त हो जाते और किसी अन्य जीव को न मारते तो मैं तेरा बड़ा ही कृतार्थ होता।

६ सर सय्यद अहमदखां साहिब अपनी तसनी-फ़ात अहमदया के पृष्ठ–३५ में लिखते हैं कि पहिले आदम को केवल पेड़ों के फल फूल खाने की आज्ञा थी हैवानात के खाने की आज्ञा न थी—

७ लन्दन के पादरी लार्ड जूशिया लार्ड विषप मांस नहीं खाते हैं आपको दस सहस्र पौंड मासिक मिलता है जिसका एक लाख पन्दरह सहस्र रुपया होता है जिसकी हिज़ मेजिस्टी किङ्ग भी प्रतिष्ठा करते हैं वह खुल्लम खुल्ला बाज़ारों में मांस खाने का निषेध करते हैं और चमड़े का जूता तक नहीं पहिन्ते हैं धन्य हैं।

८ जेम्स एलन एडीटर लाइट आफ़रीज़न यह भी मांस नहीं खाते जिन्होंने एक विजीटेरियन होटल खोल रक्खा है।

९ रिव्यू आफ़रेव्यूज़ के एडीटर भी मांस नहीं खाते जिनके समाचार पत्र की विस्तीर्णता तीन लाख है।

१० इंगलिस्तान के प्रसिद्ध कवि Shelly शेली नितान्त निरामिश हारी थे।

११ इसी प्रकार सब से रागी रिचर्ड वेगनर Richard Wagner भी मांस को हाथ नहीं लगाते थे।

२३—आजकल प्रकाश का समय है आपकी यह प्राचीन समय, पूर्वकाल के उदाहरण और सम्मतियां मानने योग्य नहीं हो सकती। क्या किसी योग्य प्रसिद्ध

अंगरेजी डाक्टर की ऐसी सम्मति है कि मांस खाना नेचर के विरुद्ध है और शारीरिक आरोग्यता को हानि कारक है आज कितने बुद्धिमान निरोग्य वीर अंगरेज़ हैं और वे सब खाते हैं।

उत्तर—सैकड़ों प्रसिद्ध योग्य अंगरेजी डाक्टरों की सम्मति मेरे कथन की पुष्टि में है आप The testimany of Science in favour of natural and huamn diet दी टसटीमनी आफ साइंस इन फेवर आफ़ नेचुरल ऐंड ह्यूमन डाइट को यदि देखें वा सुने तो आपको पता लग जावे कि कितने और कैसे२ प्रसिद्ध प्रतिष्ठित डाक्टरों ने अनुभव और (परीक्षायें) करके अपना विचार प्रकट किया है और मांस खाना कितना हानि कारक और न खाना कितना लाभ-दायक सिद्ध किया है।

२४—अंगरेजी किताब जब मंगाई जावे, तब देखी जावे और जो अंगरेज़ी नहीं पढ़े हैं वे प्रथम अंगरेजी पढ़ें तब पढ़कर नतीजा निकालें यदि आपको कुछ उनके नामों और उनकी सम्मतियों का पता हो तो संक्षेप वर्णन कीजिये नहीं तो कहने में क्या लगता है मैं भी कह सकता हूं कि सैकड़ों डाक्टर आप के पक्ष में नहीं वरन् मेरे पक्ष में हैं—

उत्तर—आप ध्यान दें एक बड़ी पुस्तक का वर्णन् तो इस छोटी सी पुस्तक में आ नहीं सकता न प्रत्येक की पूरी २ लम्बी चौड़ी सम्मति लिखी जा सकती है हां कुछ महानुभावों के नाम और कुछ संक्षेप रूप में सम्मति लिखी जाती है इसी से आप प्रतिफल निकाल लें मैं आपका अति कृतज्ञ हूंगा।

मिलटन, पीटर, सेनका, पिल्युटार्क, जेम्स, अज़ाक, फ़ीसागोर्स, अफ़लातून, अरस्तू, सुक़रात, शेसेन्डी, एच- के लाग, जूशियाओल्डफील्ड, एओवे, वालटरहाडविन, हेनसन, सानडर्स, विलयम लारेंस, डाक्टरपाचट, हेग, राजर्स, जानवड आदि अनेक प्रसिद्ध विख्यात विद्वान डाक्टर स्वयं शाकाहारी थे और बतला गये कि शाक-पात मांस की अपेक्षा शारीरिक और आत्मिक बल को अधिक लाभकारी ही नहीं है वरन मांस बहुत ही हानिकारक है सत्रह डाक्टरों की सम्मति निम्न लि-खित है—

१—डाक्टर वालटर हाडविन, एमडी, लिखते हैं मेरा—२५ वर्ष से मछली और पक्षियों का मांस छोड़ देने का अनुभव है और मेरे माता पिता नेभी अनुभव

किया जिन्होंने ६० वर्ष की आयु में छोड़ा था जिनकी आयु अब ८०–९० वर्ष की है मेरी और उनकी हेल्थ (आरोग्यता) बहुत अच्छी है मैंने ऐसे रोगियों पर परीक्षा की तो ज्ञात हुआ कि फलों का अहार अन्य औषधियों की अपेक्षा बहुत लाभ कारक है।

२—मिस्टर हैनसिन-कहते हैं जब मैं मांस खाता था तब मुझे जिगर का दर्द रहता था अब जब से मैंने मांस छोड़ दिया अब उस कष्ट को जानता भी नहीं।

३—मिस्टर सॉडर्स—अपने को बतलाते हैं कि मुझे मांस त्यागे साठ वर्ष हो गये मेरे कभी भी शिर में पीड़ा नहीं हुई अब ९१ वर्ष की अवस्था में मुझे वृद्धावस्था अर्थात् बुढ़ापे की आमद दृष्ट पड़ती है।

४—डाकुर जूशिया ओल्ड फ़ील्ड लिखते हैं कि मैंने उन पुरुषों को अपने पास रखकर अनुभव किया जो साठ सत्तर और पचहत्तर वर्ष की अवस्था तक मांस खाते रहे फिर उन्होंने बिल्कुल अपने भोजनों मेंसे मांस निकाल दिया था उन में से एक को भी किसी प्रकार की हानि नहीं हुई वरन उल्टा उनके शरीर में अधिक बल प्रतीत होने लगा वह एक प्रकार हलकापन और

स्वतन्त्रता अपने शरीर में समझने लगे उक्त डाक्टर का ख्याल है कि मनुष्य शाकाहारी है वर्तमान काल में मांस खाने के कारण रसौली, पथरी, आंतों में कीड़े आदि बहुत रोग हो जाते हैं।

५—डाक्टर जानूवुड्-कहते हैं कि मेरी सम्मति में मांस खाना अनावश्यक है यह केवल हेल्थ को हानि-कारक नहीं है वरन प्रत्येक दशा में विरुद्ध भी है प्राचीन और वर्तमान दशा से पता लगा है कि शाकाहारी बल-वान् विद्वान् नैयायिक होते हैं और अधिक साहसी और धृतिमान होते हैं।

६—डाक्टर रावर्ट पर्कस—कहते हैं कि वह विषैली वस्तुयें जो जानवरों के मांस में मिली होती हैं वह अवश्य ही धीरे २ जो लोग मांस खाते हैं उनके शरीर में शरायत करती जाती हैं जो लोग एक दम से मर जाते हैं और डाक्टर गुर्दे का रोग अथवा दिल की निर्ब-लता उसका कारण बताते हैं वास्तविक उसका कारण यह है कि मांस खाने से धीरे २ उनके शरीर में विष प्रवेष करता रहा है।

७—डाक्टर हेग साहिब-लिखते हैं कि जहां तक

मैंने खोज किया है तो मुझे पता लगा है कि यह बात केवल सम्भव ही नहीं वरन हर प्रकार मानने योग्य है कि सब्ज़ी खाने से शारीरिक मानसिक दोंनो शक्तियां बलिष्ट होती हैं।

८—प्रोफ़ेसर पोरीगेसेन्डी-बतलाते हैं कि नेचर ने हमें मांसाहारी नहीं बनाया है मांसाहारी पशुवों के दांत तेज़ नुकीले होते हैं और उनके भीतर और बीच में अन्तर होता है।

९—सर हेनरी टामसन साहिब लिखते हैं कि यह-बात निर्मूल है कि मनुष्य जीवन के लिये मांस आवश्यक वस्तु है।

१०—प्रोफ़ेसर जोसिम्स वुडहेड—लिखते हैं कि बीमारी (रोग) आने पर उनका इलाज (दवा) करने की अपेक्षा यह अच्छा है कि जिस प्रकारहो ऐसे उपाय किये जावें जिससे रोग ही उत्पन्न न हों सब्ज़ी और फल और मेवज़ात खाने की आदत इस विषय में अति-ही सहायक होगी

११—डाक्टर राजर्स-कहते हैं कि मुझे शाकाहारी हुये १३ वर्ष हुये इस समय में मुझे प्रकट हुआ कि मेरे

कुल हवास (ज्ञान और कर्मेन्द्रिय) प्रथम की अपेक्षा सब अच्छे हैं और मेरा स्वास्थ्य भी अच्छा है मछली खाने से मुझे कोई हानि नहीं हुई वरन हर प्रकार के लाभ दिखाई पड़े डाक्टर साहिब यह भी बतलाते हैं कि मांस में कुछ ऐसी चीज़ें मिली हुई होती हैं जो विषैली हैं। वह मांस को मादिक वस्तुओं के समान बताते हैं और उनका कथन है कि शाकाहारियों में सहन शीलता अधिक होती है।

१२—डाक्टर जे. एच. के. लाग-कहते हैं कि एक पुरुष की गर्दन पर ४ वर्ष से कैंसर रसौली थी उसने पता लगाने पर मांस खाना छोड़ दिया और शाकाहारी बन गया उसको शीघ्र आराम होने लगा और थोड़े ही काल में धीरे २ वह सब दूर हो गई। मिश्र देश के सब डाक्टरों की सर्व सम्मति है कि जो पुरुष मांस नहीं खाते उन में रसौली का रोग पायाही नहीं जाता।

१३—डाक्टर एमार्सडन एम. डी.—लण्डन के कैंसर हस्पताल के चेयरमैन साहिब लिखते हैं कि आंतों के सूज जाने वाले रोग की जो अधिकता पाई जाती है उसके रोकने के लिये सब से प्रथम आवश्यकता है कि

मृतक मांस और स्वास्थ्य के लिये हानिकारक खाने के पदार्थों की बिक्री बन्द कर दी जावे।

१४—"हैकिल" साहिब—कहते हैं कि मनुष्य और बन्दर की बनावट में बराबर दो दो सौ हड्डियां और तीन २ सौ मांस के टुकड़े, आमाशय के भीतर चार कोठरियाँ ३२ दांत, पेट की गिल्टी पाचन शक्ति—थूक खिल्त संतानोत्पत्ति सब एक से पाये जाते हैं और बन्दर के समान पुरुष भी मांसाहारी नहीं है।

१५—सरचार्ल्स बैल बतलाते हैं कि मनुष्य की खाल हाथ पैर की बनावट और पाचन शक्ति सब शाकाहारी पशुवों के समान हैं।

१६—प्रोफ़ेसर विलियम लारैन्स—बतलाते हैं कि मनुष्य के दांत मांसाहारी जानवरों के दांतों से किञ्चित भी समानता नहीं रखते।

१७—प्रोफ़ेसर वेरन क्युवियर साहब—कहते हैं कि मांस की वास्तविक दशा छिपाने और अग्नि पर गर्म कर नर्म करने और उसकी दुर्गन्ध को मसालों से दबाने से दांतों से चबाने योग्य मांस को बनाते हैं। मनुष्य बन्दर के समान है मनुष्य को कन्द मूल फल जड़ी बूटी

शाक पात इकट्ठा करने में सुगमता है जो उसका प्राकृतिक आहार है ।

इसके अतिरिक्त सन् १९०५ में मेमोरियल हाल लण्डन में जितने वेजीटेरियन लेकचरार थे उन सब की आयु ८० वर्ष वा उससे भी अधिक थी जिनके लेकचर बड़े उत्तम गम्भीर मनोहर थे जिसमें श्रोता लेकचर की समाप्ति पर थोड़ी देर और कथन करने की प्रार्थना करते थे जिनके नाम प्रोफ़ेसर मेयर मिस्टर " सांडर्स " मिस्टर "वाइल" मिस्टर " वालेस " आदि थे जिससे पता लगता है कि सब्ज़ी खाना कितना लाभदायक है वीरता और बल के विषय में प्रोफ़ेसर अरविङ्ग फ़िशर साहिब ने सन् १९०६ व १९०७ ई० में ३९ पुरुषों पर परीक्षा करके जाना था कि मांसाहारियों की अपेक्षा निरामिषहारी पहिलवान थे मांसाहारी अधिक से अधिक २२ मिनट तक हाथ फैलाया हुआ रख सके उससे दुगुण समय तक मांस त्यागी फैलाये रहे मांस त्यागिओं में एक तो १६० मिनट तक दूसरा १७६ मिनट तक तीसरा २०० मिनट तक हाथ सीधा फैलाये रख सका आदि आदि कई परीक्षाओं में मांस त्यागी ही उत्तीर्ण हुए। जार्ज ए. औले

जो पैर गाड़ी पर चढ़नेवाले बीर पुरुष हैं तो २८२ मील २७ घंटे ग्यारह मिनट में गये वह और मिसरौज़ा सिमन्स जिनसे अधिक आज तक कोई भी तमाम संसार में पैरगाड़ी पर अधिक तेज़ नहीं गई शाकहारी सबज़ी खाने वालीही थीं।

२५—उपरोक्त कथन से एसी झलक आती है कि मांस खाने से अन्यों के सताने वा अनुचित दवाने (ज़ब्र ज़ुल्म) का सुभाव बढ़ जाता है इस कारण मांसाहारी निरामिषहारियों को दबाये रहेगा और वह अपनी सिधाई और सहन शीलता के कारण सहन करेंगे इस लिये हुकूमत (अधिकार) के ख्याल से तो मांस खाना आवश्यक हुआ सब हकीम बनना चाहते हैं महकूम बनना कोई नहीं चाहता।

उत्तर—यह बात सिद्ध हो चुकी है कि मांस खाना कायरता और डरपोकपन (बुज़दिली) सिखाता है फिर वह दबा नहीं सकते न हकीम अधिष्ठाता बन सकते हैं अधिष्ठाता बनने को विद्या और बुद्धि की आवश्यकता है विद्वान् और बुद्धिमान ही मूर्ख और निर्बुद्धियों पर अधिकार रख सकते हैं इसमें

संदेह नहीं कि क्रोध और अनुचित कार्य्य करने का अभ्यास मांस खाने से बढ़ जाता है परन्तु आप जानते हैं कि उसका प्रभाव भाई माता पिता पर ही अधिक पड़ सकता है, बाहिर वाले बहुत कम प्रभावित होते हैं उन से तो उसे भी भय लगा रहता है दूसरे शाका-हारी शान्त सात्वकी स्वभाववाले पुरुष पर तो क्रोधी तामसी प्रकृति वाले पुरुष के क्रोधादि का कुछ प्रभाव पड़ ही नहीं सकता। क्या आप नहीं जानते कि आग को पानी बुझा देता है शान्ति के सामने क्रोध ठंडा हो जाता है जो आपने सुनाही होगा कि शेर भेड़ियों जैसे दुष्ट जीवों पर साधु तपस्वियों निर्वैर दयावानों की दया का और शीतलता का प्रभाव पड़ जाता है। तपस्वी मन वच कर्म से यथार्थ में हिंसा-त्याग का दृढ़व्रत कर लेते हैं इस कारण उन के भी दुःख देने को शेर सर्पादि कोई चेष्टा तक नहीं करता क्या आपने वह कहानी नहीं सुनी कि एक पथिक ने एक व्याघ्र के पैर का कांटा निकाल दिया था वह उसके उपकार से इतना प्रभावित हुआ कि उसने उसकी ओर कभी क्रोध दृष्टि से भी नहीं देखा वरन उसके

उत्तर—यह ख्याल ही ख्यालहै यदि मांस स्वयंही स्वादिष्ट होता तो केवल कच्चा या भुना मांस फल और नाज की भांति खाते फिर बताते कि कितना स्वाद है क्या सच कहते हो कि आपको घी दूध मलाई मिठाई अंगूर अनार नाना प्रकार के फलों से वह अधिक स्वादिष्ट ज्ञात पड़ता है ? मेरा तो ख़्याल है कि मांस में जो कुछ स्वाद है वह घी मसाले का है जितनाही वह कम पड़ता है उतनाही कम स्वाद आता है यदि उतनाही मसाला और घी अन्य व्यंजनों में डालो तो उतनाही स्वाद पासकते हो । कई बार ऐसा हुआ कि मैंने बिना मांस के गुल्ले बनाये और मांसाहारियों को खिलाये तो उन्हें यह विवेक तक न हुआ कि यह मांस के कबाब हैं या अन्य अन्नादिक के गुल्ले हैं लीजिये निम्न रीति से बना लीजिये पोस्त के दानों को पाव सेर पानी अथवा न्यूनाधिक आवश्यकतानुसार भिगोकर पिसवा लीजिये और गेहूं के आटे को भिगोकर एक गाढ़े के अंगौछे में ऊपर से पानी डालकर हाथ से चलाकर सफ़ेदी दूर कर दीजिये जब खोजड़ रहजावे तो उसको उसी पिसे हुए पोस्त के बराबर रख लीजिये और दोनों को बराबर

मिलाकर हलदी मिर्च गर्म मसाला नमक आवश्यकतानुसार (अर्थात् जो चीजें मांस में मिलाकर बनाते हों वह सब उनमें भी मिलाइये फिर उनके गुल्ले बनाकर साये में रखलीजिये आध घंटे पश्चात घी कढ़ाही में छोड़ कर उनको भले प्रकार भून लीजिये यदि रसेदार करना हो तो अलग प्रथम हलदी मिर्च मसाले को घृत में भून कर उसमें इन्हें छोड़ कर रसेदार बना लीजिये परन्तु बहुत अधिक रसा न रक्खा जावे फिर देखिये वैसाही स्वाद आता है वा नहीं और कोई मांसहारी बिना बताये पहिचान भी सकता है वा नहीं।

२८—कस्तूरी हरिण को मार कर और शहद मक्खियों को कष्ट पहुंचाकर उनके बच्चों को मारकर प्राप्त किया जाता है यह भी महापाप है इस कारण इसको भी प्राप्त करना और खाना छोड़ देना चाहिये—

उत्तर—यह बात तो अन्य है कि कोई मनुष्य पाप करते २ इतना अभ्यासी होजावे जो उसे अपने लाभ के लिये उचित और अनुचित का विवेक न रहे आजकल शहद के प्राप्त करने की रीति यदि मक्खियों को मारना नहीं है तो उनके अण्डे बच्चे को मारना तो अवश्यही

है नहीं तो यदि शहद प्राप्त करना चाहें तो मक्खियों को उड़ा दें अण्डे बच्चे जो शहद के खानों से प्रथम मोम के घरोंमें रहते हैं उन्हें छोड़कर शहद वाले घरों से शहद निकाल लें जिससे मक्खियां भी न मरें और अण्डे बच्चे भी बचजावें पश्चात् जब अण्डे बच्चे पलजावें और मक्खियां दूसरा छत्ता बनालें तब यदि मोम लेना चाहें तो लेलें। जिन्हें हिंसा का ख्याल है वह हिंसा को बचाते हैं और पहाड़ों में तो मक्खियां पलाऊ रहती हैं हाँ यह कंजड़ आदि महामांसभक्षी निरदई कब इस बात का ध्यान करते हैं जो नहीं करते यह उनका दोष है कस्तूरी तो हरिण को मार कर प्राप्त ही नहीं कीजाती जिस हरिण की नाभी में नाफः उत्पन्न होता है वह हरिण उसकी सुगन्ध से उन्मत्त होकर यह न समझ कर कि यह गन्ध मेरी ही नाभी में विद्यमान है इधर उधर उसकी खोज में भटकता फिरता है और स्वयं ही व्याकुल होकर दौड़ते २ कहीं कांटे कुबढ़ों पेड़ों की ठुंठों से टकराकर प्राण त्याग नाफः आप के अर्थ छोड़ जाता है यह और बात है कि किसी स्वार्थी खोजू को यह हरिण की दशा देख पता लग

जावे और वह शहद प्राप्त करने की भांति उसे जान से मार दे तो वह उसका दोषी है यह भी ज्ञात हुआ है कि नाफः हरिण के जीवन में नियत समय पर स्वयं उसकी नाभी से पकेफल की भांति छूट जाता है तब हिंसा कैसी ?

२९—अच्छा बताइये कि ईश्वर ने मनुष्य को मांसाहारी बनाया है वा नहीं और यह अपने नियम पर स्थिर है वा नहीं ?

उत्तर—आप सृष्टि क्रम की ओर ध्यान दें और सोचें कि परमेश्वर ने मनुष्य के शरीर और उसके प्रत्येक अंगोपांग को मांसाहारी जीवों के सदृश बनाया है वा शाकाहारी पशुओं की भांति तब पता लगे। जराउज अर्थात् जर्या से उत्पन्न हुआ जैसा मनुष्य है वैसे ही शेर भेड़िया और घोड़ा गाय बकरी आदि हैं सब जानते हैं कि शेर भेड़िये मांसाहारी और गाय घोड़े बकरी निरामिषहारी हैं अब कल्पना कीजिये कि दोनों प्रकार के जीवों में झगड़ा है। शेर आदि एक समुदाय के जीव मनुष्य को इस हेतु से अपने में सम्मिलित करते हैं कि मनुष्य मांस खाता है इस

कारण हमारा संगी है दूसरी ओर घोड़े बकरी आदि इस हेतु से अपनी ओर खींचते हैं कि उन में से बहुत से नहीं खाते जो खाने लगे हैं उन्होंने सृष्टि नियम के विरुद्ध आचरण किया है वास्तविक मनुष्य दयावान और प्राणी मात्र को मित्र दृष्टि से देखने वाला है अथवा यह समझिये कि दोनों पक्षपाती पुरुषों में इस बात पर झगड़ा है एक नेचुरेल स्वाभाविक मनुष्य को मांसाहारी समझता है दूसरा निरामिषहारी अन्त को दोनों एक महात्मा निरपक्षी न्यायी अधिष्ठाता के समीप जा कर निर्णय की प्रार्थना करते हैं कि आप हम दोनों को युक्ति पूर्वक निर्णय कर दीजिये और संतोषजनक फ़ैसला दीजिये वह निश्छली धर्ममूर्ति यथार्थ उत्तर देता है कि तुम दोनों मनुष्य की शरीर की बनावट और उसके अंगों की रचना को देखो और मिलाओ कि वह किससे अधिक मिलते हैं निरामिषहारी घोड़ा आदि पशुओं वा आमिषहारी व्याघ्रादि जीवों से जिससे अधिक मिलते हों वही मनुष्य का अपना साथी और सहभोगी ख्याल कर सकता है।

१—मांसाहारी जानवरों के दांत नोक़दार, कीले की

भांति बिखरे होते हैं और वह मांस को भूमि अथवा किसी अन्य वस्तु पर पटक पटक कर खाते हैं और सब्ज़ी खानेवालों के दांत चपटे और बराबर होते हैं और वह चबा २कर खाते हैं इससे देखो कि मनुष्य किससे समानता रखता है। यदि कहो चार दांत मनुष्य के सामने के भी वैसेही हैं तो प्रथम तो वैसे नहीं है और वे नाज के तोड़ने के अभिप्राय से हैं क्योंकि मनुष्य केवल शाकही तो नहीं खाता और मांसाहारी जीवों के दांत उसकी आयु पर्यन्त नहीं टूटते वरन् बढ़ते ही रहते हैं।

(२) मांसाहारी पानी में जीभ डाल कर पानी को चाट २ कर पीते हैं शाकाहारी होंठ बांध कर पीते हैं।

(३) मांसाहारी दिन में सोते रात को घूमते और जागते हैं परन्तु शाकाहारी रात्रिमें शयन करते हैं मांसाहारियों की आंखें गोल और शाकाहारियों की आंख लंबी होती हैं मांसाहारियों को रात्रि में अधिक दिखाई देता है शाकाहारियों को दिन में, देखो मनुष्य किसके समान है ?

(४) मांसाहारी जीवों को पसीना नहीं आता, थूक

लुआब मुंह में कम पैदा होता है शाकाहारियों की विरुद्ध दशा है

(५) सब्ज़ी खाने वाले सब्ज़ी को देखकर और मांसाहारी मांसको देखकर प्रसन्न होते हैं देखो मनुष्य की आंख को किससे प्रसन्नता और किससे घृणा होती है।

(६) मांसाहारी जानवर समागम के समय फंस जाते हैं सब्ज़ी खाने वाले नहीं।

(७) मांसाहारी जीवों का आमाशय थैले के समान और अन्तड़ियां बहुत छोटी होती हैं। शाकाहारियों की इसके विरुद्ध।

(८) मांसाहारियों के बच्चे जब उत्पन्न होते हैं तो उनकी कई दिन तक आंखें बन्द रहती हैं परन्तु निरामिषहारियों की तुरंत ही खुल जाती हैं।

(९) जहां पर मांस की दुकानें होती हैं वा जिन ताल का पानी गँदला हो जाता है वा जहां पर कोई मरा हुआ जानवर फिका होता है लाखों चील, कौये, गिद्ध, कुत्ते, बिल्ली सियार, रहते और दौड़ते देखे जाते हैं। परन्तु किसी चरने वाले पशु को उस मांस की ओर देखने और उसके निकट जाने की इच्छा नहीं होती

न उसका जी साक्षी देता है कि खाकर स्वाद ले। परन्तु जब वह हरी २ घास देखते हैं तो बड़ी प्रबल इच्छा से उसकी ओर दौड़ते हैं वैसे ही उन दरिन्दे जीवों को घास फल की चाहना नहीं होती जब वह किसी जानवर को देखते हैं तो उसकी ओर लपकते हैं प्रत्येक मनुष्य के मन में शाकपात इत्यादि लता की चाह और दुर्गन्ध और मांस की भयानक शक्ल से घृणा पाई जाती है। कोई मनुष्य यदि मांसादि लिये जाता है चील झपट्टा करती है कि यह मेरी खुराक है तू क्यों लिये जाता है। यदि फलादि लिये जाता हो तो कोई चील गिद्ध झपटा नहीं करता वह जानता है कि यह मनुष्य की खुराक है मेरा इस पर अधिकार नहीं है इस पर मनुष्य लुभाया हुआ है प्रत्येक बालक फल की ओर उसी प्रकार दौड़ता है जैसे बिल्ली अपने रक्तमय शिकार के लिये। क्या किसी मनुष्य का किसी बैल, बकरी को खड़ा हुआ देख उसका जी चाहता है कि मैं उस पर मुह मारूं या दांत गाड़ कर उसे खा जाऊं। वरन् मनुष्य तो कच्चे मांस पर मक्खियां भनंकते हुये देख कर घृणा प्रकट करता है और मुंह फेर लेता है और थूकता है यदि कोई जानवर निर्दयता

से मारा जाता हो तो बचाने का यत्न करता है। परन्तु शोकस्थान है कि मनुष्य मसाले में लपेट कर प्राकृतिक नियमों को तोड़कर भून भान कर खा जाता है। और बैल, घोड़े, बकरे से। जो अपना नियम नहीं तोड़ते चाहे कोई उनके सामने मांस का टुकड़ा डाल दे वह नहीं खाते, यह सर्वोत्तम होता हुआ उनसे भी गिर कर खाने लग जाता है जो केवल संस्कार और संगत और अविद्या के प्रभाव से प्रभावित हुआ है यदि हम समझ जाते कि—

बक़ालिब अगर जान नतवां निहाद ।
पये कुश्तन अज कस शायद फ़िसाद ॥

अर्थात् यदि किसी शरीर में प्राण नहीं डाल सकते तो मारना भी नहीं चाहिये—तो अवश्य परहेज़ करते अथवा इतनाही समझते कि नाकारे (निकम्मे) आज़ार (कारण) से काम भी नाकारा बनता है तो भी इसे खाकर अपने मनरूपी औज़ार को निकम्मा न करते।

३७—फिर क्या कारण है कि मनुस्मृति में दोनों बातें लिखी हैं बहुत से श्लोकों में मांस खाने का निषेध है और बहुतों में विधान है यहां तक कि एक स्थान में मांसके

पिण्ड देने और श्राद्ध में मांस खिलाने से १२वर्ष तक पित्रों की तृप्ति बताई है। दूसरी जगह एक वर्ष तक खाने से एक अश्वमेध यज्ञ का फल बताया गया है हम दोनों को क्यों सत्य न मानें।

उत्तर—यह परस्पर विरोध स्वयं आपकी आत्मा को अशान्त कर रहा है और अनुभव करा रहा है कि एक साधारण पुरुष की बात भी तो परस्पर विरुद्ध नहीं होती और जिसकी होती है उनमें एकही सत्य होती है जो कभी कुछ कभी कुछ कहता है वह असत-वादी और छली समझा जाता है तो मनु जैसे धर्मात्मा कभी विरुद्ध सम्मति रख सकते थे कदापि नहीं यह वामियों वा विरोधियों के मिलाये हुये श्लोक हैं जिन्होंने धोखा और छल से भोले भाले भाइयों को बहिकाया और भरमाया है जब कि धर्म के दस लक्षणों में अक्रोध, अहिंसा बतलाई है और बीसों जगह (अहिंसा) (प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैर त्यागः) योगशास्त्र में लिखा है तब हिंसा धर्म कैसे हो सकता है और "वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति" का अर्थ यह है कि वेद के अनुकूल जिन दुष्ट डाकुओं को वध फांसी की आज्ञा दी जावे तो वह हिंसा हिंसा नहीं

कहलाता न कि निरपराधी जानवरों का वध पाप नहीं—

३१—कोई ऐसा प्रत्यक्ष प्रमाण दो जिस से यह सिद्ध हो जावे कि जो मनुष्य खाते हैं परन्तु वास्तव में पाप वे भी समझते हैं।

उत्तर—बहुत से यथाशक्ति उत्तर दिये गये पर आप अब तक अशान्त हैं संतुष्ट नहीं हुये अच्छा एक दो उत्तर और सुन लीजिये। निषेध कभी शुभ कर्मों का नहीं होता न उनके करने में भय लज्जा शंका होती है। क्या आप नहीं जानते? कि बड़े २ कट्टर मांसाहारी हिन्दू भी पन्द्रह दिन कनागतों में इसका खाना छोड़ देते हैं यदि वह बुरा न समझते तो कदापि न छोड़ते क्योंकि वे उन दिनों में शाक भाजी दाल रोटी आदि तो छोड़ ही नहीं देते और सब मुसलमान एहराम के दिनों में और पंचशंबा (वृहस्पतिवार) को शिकार नहीं करते अकबर बादशाह ने गायों की निम्न प्रार्थना (फ़रयाद) सुनकर गायकुशी बंद करादी थी जो चिट्ठी गायों के गले में से खोल कर बादशाह को सुनाई थी—

जो दांतन तृण गहत तिन्हें नहिं हनत सबल हय।

निश दिन हम वन चरत वचन बोलत अधीन मय ॥
तुर्कन तुच्छ न देत न हिन्दुन मधुर पियावत
क्षीर सुलघन नित देत पुत्र दल थम्भन जावन ॥
विनती शाहजलालुद्दीन से गौ करन और करन ।
केहि कारण मोहिं मारयत मरेहु चर्म सेवत चरन ॥ *

कबीर साहिब जिन्हें मुसल्मान तो मुसल्मान और हिंदू करावड हिंदू बताते हैं वह लिखते हैं—

इद झटका उन बिसमिल कीन्हा दया दुहां से भागी ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो आग दुहां घर लागी ॥

सनातनधर्मी पंडित तो हिन्दू शब्द का अर्थ ही हिंसा का दूर करनेवाला कर रहे हैं और रावण पुलस्त मुनि के पोते लंका के राजे वेदों के पारग को केवल मद्य मांस सेवन के कारण ही राक्षस का पद प्रदान कर रहे हैं ।

---

* कैसा भारतवर्ष के सौभाग्य का वह दिन होगा जब हमारे शिरोमणि शिरोधारी चिरंजीवी जार्ज पञ्चम भी भारत का हित जान कर भारत निवासियों के कल्याणार्थ गोवध के बन्द कर देने की आज्ञा प्रदान करेंगे और सारे भारतवर्ष में जै जैकार की ध्वनि मचैगी ईश्वर ऐसाही करे !

काशी में एक पंडित के गङ्गा में नहाते समय एक रोहू का पट्ठा हाथ लग गया उसने झट पकड़ कर अँगौछे में लपेट कर बग़ल में दबा लिया कि घर जाकर बना खावेंगे रास्ते में कोई और पंडित मिले पूछा कि आपकी बग़ल में क्या है बतलाया कि पुस्तक है फिर पूछा कि जल कैसा चू रहा है उत्तर दिया कि काव्य का साररूपी जल है फिर कहा पूछ भी क्या दिखाई देती है कहा भगताल पत्र पर लिखी है कहा बास सो क्या आ रही है कहा जब रावण राम का युद्ध हुआ था तब की लिखी हुई है इस कारण गन्ध देने लगी है फिर पूछा फड़फड़ाती भी क्या है कहा गूढ़ मन्त्र लिखे हैं इस वास्ते संजीवनी हो गई है जैसा कि–

कुक्षौ किं मम पुस्तकं किमुदकं काव्यस्य सारोदकम् ।
पक्षौ किं भगताल पत्र लिखितम् भो भो गुणानां निधे ॥
गन्धः किं खलु राम रावण युधायुद्धोतान्धोत्कटम् ।
जीवः किं ननु गूढ़ मन्त्र लिखितं संजीवनी पुस्तकम् ॥

जितना छल किया यदि पाप न समझता तो इतना झूठ क्यों बोलता इस पर न मानोगे तो मैं अपने मित्र मुं० सीतलप्रसाद का पद पढ़ूंगा कि "जिनके क़ाबू में नहीं आती सीतलप्रसाद काटकर अपनी ज़ुबां क्यों नहीं खा जाते हैं"।

३२—ईश्वर ने अपनी सृष्टि का दो प्रकार की बना रक्खी है एक मुस्तामिल (वर्तनेवाला) दूसरी मुस्तामिलः (वर्तने योग्य) मनुष्य सर्व पदार्थों का वर्तने वाला है और सब पदार्थ वर्तने योग्य हैं ईश्वर ने अपनी महती कृपा से हमारी सवारी के अर्थ हाथी, ऊंट, घोड़ा, हल चलाने के अर्थ बैल भैंसे खाने के अर्थ बकरी, मुर्गी उत्पन्न किये हैं हमको अधिकार है कि हम उनको वर्तें यदि कोई इसके विरुद्ध दस दिन उन पर सवारी करे और दो दिन अपने ऊपर उन्हें चढ़ाकर घूमे तो बुद्धिमान पुरुष उसे क्या ख्याल करेंगे? इसलिये हम जैसा चाहें उनके साथ वर्ताव करें—

उत्तर—क्या खूब—यदि आपके कथनानुसार और जानवर मनुष्य के अतिरिक्त वर्तने योग्य मुस्तामिलः हैं तब तो शेर आदि मनुष्यों को कभी न खा सकते

इसके विरुद्ध आज सैकड़ों पुरुषों के बच्चों को भेड़िये खा गये और खा जाते हैं आपने मुस्तामिल और मुस्ता-मिलः का लक्षण ही न समझा यदि मनुष्य घोड़े बैलों पर चढ़ता है तो सहस्त्रों साईस भी घोड़ों बैलों के अर्थ घास खोदते और चारे घास का बोझा सर पर उठाये हुये दिखाई पड़ते हैं यदि स्वामी के वास्ते घोड़ा मुस्ता-मिलह है तो घोड़े के वास्ते साईस मुस्तामिला है और शेर भेड़िये के वास्ते आदमी मुस्तामिला है क्योंकि शेर भेड़िये तो कोई सेवा नहीं करते खा ही जाते हैं इसलिये यह ख्याल आपका अविद्या-युक्त है वास्तव में मित्रवर! प्राणीमात्र में तबादला है मनुष्य मनुष्य को क्यों उठाते हैं आपके न्यायानु-सार तो असम्भव है यह ख़ूब फर्माया हम जैसा चाहें उनके साथ बर्ताव करें—उचित लाभ आप उनसे उठा सकते हैं अनुचित नहीं। ध्यान दीजिये सरकार ने सड़कों पर पेड़ इस कारण लगाये हैं कि पथिक छांह में बैठे सूखी गिरी लकड़ी और पत्ते जलायें परन्तु कोई आप जैसी बुद्धिवाला यह समझ कर कि सरकार ने पथिकों के लिये लगाये हैं मेरा हक़ है कि काट कर ले

जाऊं जला दूं जो चाहूं सो करूं और काट डालें तो क्या हाथों में हथकड़ियां पहिन कर बड़े घर का मुंह न देखेगा। इसी प्रकार परमेश्वर ने जानवर भी लाभ उठाने के अर्थ बनाये हैं कोई उन्हें वधकर के खा जावे तो क्या वह आज्ञा तोड़ने के अपराध में दण्ड भागी न होगा जब किसी का बना हुआ घर गिरा कर उस गृह से निष्कारण निकाल देना अपराध है और उससे ही दुख गृह के स्वामी को होता है और वह सामर्थ्य भर हाई-कोर्ट तक अभियोग ले जाता है तो जिस जीवात्मा को चाहे वह पशु पक्षी की योनि में हो, चाहे मनुष्य की जिसका यह शरीर गृह के तद्वत है जिसके हाथ पैर सब बड़े सहायक हैं जो आंख में तिनका पड़ जाने तक के कष्ट को सहार नहीं सकता, उसको उसके शरीर-रूपी गृह से अलग कर देना घोर पाप क्यों नहीं है? ईश्वर, यह मनुष्य कितने कठोर चित्त बन गये हैं वधगृहों में मशीनें लगा कर रक्खी हैं बिन जिह्वा के दीन पशु को कई दिन भूखा रखते फिर घास डालते हैं वह तृण चुगने को जाते हैं ऊपर मशीन गिरती है सैकड़ों के एक साथ सर अलग जा पड़ते हैं रक्त पीपों में भर और मांस सुखाकर इधर उधर चला जाता है।

३३—आप मांस खाने का निषेध करते हैं। परन्तु आज सामान्यतः सभी हिन्दू मुसलमान खुल्लम खुल्ला शक्कर दरी अर्थात विदेशी खांड जिसके लिये समाचार पत्र चल्ला रहे हैं कि जानवरों के रक्त तथा मूत्र हड्डी वरन कोढ़ियों के मांस तक से शुद्ध की जाती है खाते हैं आप उसकी मनाई नहीं करते क्योंकि मनुष्य के मांस तक से शुद्ध हुई शक्कर के खाने से अधिक पाप बकरी आदि के मांस खाने में है कदापि नहीं आज धर्म २ पुकारा करो धर्म कौन समझता है बड़े २ तिलकाधारी वैष्णव तक खाते हैं जब मनुष्यों तक का मांस खा लिया तो बचाव कैसा और कहां रहा—

उत्तर— यदि मनुष्य एक पाप करले तो क्या और भी सैकड़ों पाप करने लगे जो हिन्दू मुसलमान उस शक्कर का सेवन करते हैं मैं उन्हें कब अच्छा बताता हूं वह निश्चयात्मक धर्म से पतित हो रहे हैं क्योंकि उनमें किसी जानवर की हड्डी रक्त और मांस का बचाव और विवेक नहीं रहता शोक उनकी बुद्धि पर है जो सस्ता होने के कारण उसका सेवन करते हैं और वेही किसी अन्त्यज के यहां की बनी रोटी मस्ती मिलने पर भी लेकर नहीं

खाते ब्राह्मण के यहां की महंगी लेकर खाते हैं परन्तु हव भक्ष्य तो है यह तो उस रोटी से अत्यन्त गिरी हुई और गई हुई अभक्ष्य वस्तु हैं। मैं जहां मांस खाने का निषेध करता हूं वहां उस शक्कर के खाने का भी तो विधान नहीं करता जो आपका मुझ पर आक्षेप है और अब तो कई कारखानोंमें पीलीभीत आदि में चूने से शुद्ध करके शक्कर बनाई जाती है

५४—अन्तिम प्रश्न—आपके उत्तर तो शान्ति दायक हैं परन्तु यदि कोई और बात आपको घृणोत्पादक मालूम हो तो और बता दीजिये जिसको सुन कर एक दम मन में ग्लानि उत्पन्न हो जावे—और फिर कभी मन इस ओर न जावे।

उत्तर—पिछले उत्तरों में तो बहुत कुछ ग्लानि दिलाने वाली बातें लिखी गई हैं उनसे अधिक मैं और क्या बता सकता हूं ख़ैर एक दो बातें और सुन लीजिये पर सुन कर विचार कर धारण कीजिये मैं भी ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह आप की बुद्धि निर्मल करे। सुनिये! इस मांस खाने के कारण मनुष्य उन पशुओं का भी मांस खा जाता है कि जिनके नाम लेने से वमन हो जाता है कई स्थानों पर कसाइयों ने बकरे के

स्थान पर कुत्तों का मांस बना कर बेच दिया ज्ञात होने पर दंड हुआ। लड़कपन में तिलहर में भी मैंने ऐसा केस सुना था और आप ने भी सुना होगा कि बहुधा व्यभिचारिणी स्त्रियों ने अपने बच्चों को बध कर के उनका मांस पका कर अपने पतियों को इस कारण खिलाया कि उसने जार का हाल क्यों पति से कह दिया जिसका उङ्गली आदि कोई चिन्ह निकलने पर पता चला। कहीं कहीं मांस बेचने वालों ने पुरुष तक का मांस पका कर बेचा सत धर्मप्रचारक पत्र के पर्चे मास बैसाख वा जेठ सं० १९०४ ई० में छपा था कि एक स्त्री किसी स्टेशन से रेल पर चढ़ी उसका पति उसके साथ रेल पर न चढ़ सका रेल छूट गई छोटी आयु का पुत्र भी उसके साथ था जिस स्टेशन पर उतरी वहां की स्टेशन का गोश्त बेचने वाला बावर्ची उसे बेटी कह कर प्रत्येक प्रकार भरोसा देकर अपने स्थान पर ले गया रात्रि को निर्दयी ने उसका बध करके सारा माल टाल उतार लिया और उसका मांस पथिकों के लिये पकाया जब दूसरे दिन उसका पति आकर उसी स्टेशन पर उतरा सयोग बश वह भी वहीं पहुँचा बवर्ची से

खाना मोल लिया उसके लिये वही उनकी औरत का मांस दिया गया खाते खाते उसमें कोई उङ्गली निकल आई यह रुका और पूछा कि यह उङ्गली कैसी तब उसके बच्चे ने बाप को पहिचान कर कहा कि दादा मेरी मांको इसने मार डाला और उसका यह मांस है तब उस पर अभियोग चला उसका परिणाम कुछही हुआ हो परन्तु सोचो कि इस मांस खाने में किन २ का मांस खिलाया यदि वह मांस न खाते होते तो कुत्ता और मनुष्यों का मांस तो न खाते और बच्चे और स्त्री के पके हुये मांस खाने से तो बचते मैं तो यही कहूंगा कि जिनपर परमेश्वर की दया होती है वेही ऐसे पापों से बचते हैं हे ईश्वर मेरी अन्तिम प्रार्थना है कि

विपदो निलमेति राजलक्ष्मी
रुपरिपतत्वथवा कृपाणधारा ।
अपहरतु तरां शिरः कृतान्तो
मम तु मतिर्न मनः गुपैति धर्मात् ॥

अर्थात् चाहे धन सम्पत्ति सर्व नाश हो जावे चाहे सर पर कृपाणों की धारा पड़े चाहे शिर धड़ से अलग जा पड़े परन्तु हे भगवन् सर्व नियन्ता परमात्मन् मेरी मति धर्म से पृथक और विपरीत न हो और हर समय यह ध्यान रहे "तुलसी दया न छोड़िये जब लग घट में प्राण" ।

